भारत के सुदृढ़ भविष्य के लिए

MIDHANI

# संकल्प

मिधानि की छहमाही राजभाषा गृह पत्रिका

वर्ष 15 | अंक 27 | अप्रैल–सितंबर 2023 | ई–पत्रिका अंक 7

## 13.05.2023 को 'रक्षा संबंधी संसदीय स्थायी समिति' का मिधानि दौरा संपन्न हुआ। झलकियाँ प्रस्तुत हैं

# संपादक मंडल


**प्रधान संरक्षक**

**डॉ संजय कुमार झा**
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

**संरक्षक**

**श्री एन गौरी शंकर राव**
निदेशक (वित्त)

**श्री टी मुत्तुकुमार**
निदेशक (उत्पादन एवं विपणन)

**परामर्शदाता**

**श्री ए रामकृष्ण राव**
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

**संपादन व डिजाइनिंग**

**डॉ बी बालाजी**
प्रबंधक
हिंदी अनुभाग एवं निगम संचार
तथा सदस्य-सचिव,
राजभाषा कार्यान्वयन समिति

**संपादन सहयोग**

**श्रीमती डी.वी. रत्न कुमारी**
कनिष्ठ कार्यालय अधीक्षक

**श्री वासुदेव**
सहायक (हिंदी अनुवादक)



**संपादक संकल्प**
**मिश्र धातु निगम लिमिटेड,**
कंचनबाग, हैदराबाद-500058
ई-मेल : b.balaji@midhani-india.in
टेलीफोन : 040-24184325, 4298
(मो) 8500920391



पत्रिका केवल आंतरिक वितरण एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए निःशुल्क है। पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे संपादक मंडल या मिधानि प्रबंधन का सहमत होना आवश्यक नहीं है।


MIDHANI

# संकल्प


**मिधानि की छहमाही राजभाषा गृह पत्रिका**
वर्ष 15 । अंक 27 । अप्रैल-सितंबर 2023 । ई-पत्रिका अंक 7


## इस अंक में


संदेश 02

संपादकीय 09

राजभाषा 10

स्वास्थ्य - आलेख 21

प्रबंधन - रामायण पर आधारित 30

लघु कथाएँ 34

फ़िल्म समीक्षा - सरदार 36

पर्यावरण 38

कविता कुंज 39

समारोह 41

आतिथेय 42

उपलब्धियाँ 43

गतिविधियाँ 44

सत्यमेव जयते

# हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

**अमित शाह**
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

प्रिय देशवासियों,

आप सब को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत भाषिक विविधता का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम 'हिंदी' है। हिंदी भाषा अपनी प्रवृत्ति से ही इतनी जनतांत्रिक रही है कि इसने भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ-साथ कई वैश्विक भाषाओं को यथोचित सम्मान देते हुए उनकी शब्दावलियों, पदों, वाक्य विन्यासों और वैयाकरणिक नियमों को आत्मसात किया है।

हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता आंदोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बाँधने का अभूतपूर्व कार्य किया। अनेक भाषाओं और बोलियों में बँटे देश में ऐक्य भावना से पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाने में संवाद भाषा हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इसीलिए, लोकमान्य तिलक हों, महात्मा गांधी हों, लाला लाजपत राय हों, नेताजी सुभाषचंद्र बोस हों, राजगोपालाचारी हों; हिंदी के शुरुआती पैरवीकारों में बहुसंख्यक उन प्रदेशों के लोग थे, जिनकी मातृभाषाएँ हिंदी नहीं थीं।

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है। प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चंद्र ने लिखा है कि, निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल। यानि कि, अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है। राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसने अपनी भाषा को किस सीमा तक मजबूत, व्यापक एवं समृद्ध बनाया है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी और लिपि के रूप में देवनागरी को अपनाया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय से वैश्विक मंचों तक यथोचित सम्मान मिला है। हमारी सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर है।

अपनी भाषा में सुनी हुई अवांछनीय बातें भी बहुत बुरी नहीं लगती। कवि विद्यापति की शब्दावली में कहूँ तो 'देसिल बयना सब जन मिट्ठा' यानि देशी भाषा सभी जनों को मीठी लगती है। गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयत्नशील है कि शहद समान मीठी भारतीय भाषाओं को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अत्याधुनिक और वैज्ञानिक प्रयोग के अनुकूल उपयोगी बनाया जा सके।

सरकार और जनता के बीच भारतीय भाषाओं में संवाद स्थापित कर जनकल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी तौर पर लागू किया जा सकता है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र जन-जन तक उनकी ही भाषा में उनके हित की बात पहुँचाकर आदर्श लोकतंत्र के निर्माण का सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। राजभाषा विभाग ने इसी उद्देश्य से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी

के माध्यम से सहज बनाने की दिशा में काम करते हुए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ' का निर्माण और विकास किया है। फिजी में संपन्न 'विश्व हिंदी सम्मेलन' में 'न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन' के साथ इसके नए वर्जन (कंठस्थ 2.0) के मोबाइल एप का भी लोकार्पण किया गया है।

राजभाषा विभाग की एक नई पहल 'हिंदी शब्द सिंधु' शब्दकोश का निर्माण है। इस शब्दकोश में संविधान की 8वीं अनुसूची में अधिसूचित भारतीय भाषाओं के शब्दों को शामिल कर इसे निरंतर समृद्ध किया जा रहा है। साथ ही, विभाग ने 'लीला हिंदी प्रवाह' मोबाइल ऐप भी तैयार किया है, जिसे अपनाकर विभिन्न भाषा-भाषी 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी-अपनी मातृभाषाओं से स्तरीय हिंदी नि:शुल्क सीख सकते हैं।

भाषा परिवर्तन का सिद्धांत यह कहता है कि भाषा जटिलता से सरलता की ओर जाती है। मेरे विचार से हिंदी के सरल और सुस्पष्ट शब्दों को कार्यालयी कामकाज में प्रयोग में लाना चाहिए। टिप्पणी, पत्राचार, ई-मेल, विज्ञप्ति आदि के लिए आम बोलचाल के शब्दों व वाक्यों के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का चलन बढ़ेगा।

हमारे लिए हिंदी का प्रश्न सिर्फ एक भाषा का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव का विषय है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा विभाग के उपरोक्त प्रयासों से सभी मातृभाषाओं को आत्मसात करते हुए लोकसम्मत भाषा हिंदी विज्ञानसम्मत व तकनीकसम्मत होकर संपन्न राजभाषा के रूप में स्थापित होगी।

पुनश्च, आप सब को हिंदी दिवस की अनंत शुभकामनाएँ।

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2023

(अमित शाह)

सत्यमेव जयते

# आप सब को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

**राजनाथ सिंह**
रक्षा मंत्री
भारत सरकार

रक्षा मंत्रालय तथा इसके अंतर्गत आने वाले सैन्य कार्यालयों, अंतर सेवा संगठनों, रक्षा क्षेत्र के उपक्रमों, भूतपूर्व सैनिकों एवं इनसे सरोकार रखने वाले सभी आम नागरिकों को हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत एक बहुभाषी देश है। यहाँ अनेक भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। हमारी सभी भाषाएँ और बोलियाँ हमारी धरोहर हैं। हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से विविधतापूर्ण और समृद्ध है। संपर्क भाषा के रूप में हिंदी के सामर्थ्य को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने 14 सितंबर, 1949 को देवनागरी लिपि को भारत संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। तभी से हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

हिंदी का समावेशी स्वरूप व्यापक है। इसमें दूसरी भाषाओं और बोलियों को आत्मसात करने की अद्वितीय क्षमता है। हाल के वर्षों में आम जनता की भाषा के रूप में स्वीकार्यता, प्रौद्योगिक विकास की गति को बनाए रखने के सामर्थ्य और सुशासन में पारदर्शिता को सुनिश्चित करने में हिंदी की भूमिका महत्वपूर्ण साबित हुई है। हमारे वीर सैनिकों की तरह हिंदी में राष्ट्र की एकता एवं अखंडता को अक्षुण्य रखने की शानदार शक्ति है।

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए रक्षा मंत्रालय में हिंदी पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है। मैं सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपील करता हूँ कि वे हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़ कर भाग लें और सरकारी काम काज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुन: मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

जय हिंद

स्थान: नई दिल्ली
दिनांक: 01 सितंबर, 2023

(राजनाथ सिंह)

# प्रधान संरक्षक

**डॉ. संजय कुमार झा**
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

## शुभकामना संदेश

प्रिय साथियों,

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि मिधानि की राजभाषा गृह पत्रिका 'संकल्प' के नवीनतम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। साथियो, अपनी इस पत्रिका को नराकास (उ.) द्वारा वर्ष 2022-23 के लिए ई-पत्रिका की श्रेणी में उत्तम पत्रिका के पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। इस उत्कृष्ट पत्रिका के माध्यम से मुझे पुन: आप सभी से जुड़ने का अवसर मिल रहा है। मैं कहना चाहूँगा 'संकल्प' मिधानि के कर्मचारियों की मौलिक सृजनशीलता, रचनात्मक व कलात्मक अभिरूचि का प्रतिनिधित्व करती है। साथ ही यह मिधानि की विभिन्न गतिविधियों एवं क्रियाकलापों को समेकित रूप प्रदान करने का एक सार्थक मंच भी है।

हिंदी हमारी राजभाषा है। इस नाते सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग हमारा संवैधानिक और नैतिक कर्तव्य है। हमें यह याद रखना होगा कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार का उत्तरदायित्व किसी व्यक्ति विशेष का नहीं, बल्कि हम सभी का सामूहिक एवं प्रशासनिक उत्तरदायित्व है। संकल्प के माध्यम से हम अपने दायित्व निर्वाह में एक कदम आगे बढ़ रहे हैं।

वर्तमान में वैश्विक वाणिज्यिक परिस्थितियों के चलते हिंदी का वैश्विक पटल पर भी वृहत विकास हुआ है तथा विदेशों में भी हिंदी के पठन-पाठन की आवश्यकता समझी जाने लगी है। ऐसे में राजभाषा हिंदी के विकास और उसकी प्रगति के लिए समर्पित भाव से अपना योगदान देने के प्रति हम सब भारतीयों का दायित्व और अधिक बढ़ जाता है। अत: राजभाषा हिंदी के प्रति सांविधिक एवं नैतिक दायित्व को निभाते हुए हमें संपूर्ण कार्यालयी कामकाज को हिंदी में सुदृढ़ता के साथ निष्पादित करना चाहिए। आप सभी के सामूहिक प्रयास से मिधानि राजभाषा कार्यान्वयन में लगातार वृद्धि कर रहा है। पिछले वर्ष 2022-23 के लिए मिधानि को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए भी नराकास (उ.) द्वारा पुरस्कृत किया गया था। आप सब को इसके लिए बधाई।

पत्रिका के संपादक मंडल, रचनाकारों तथा प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सफल प्रयासों के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ। अंतत: आप सभी से अनुरोध है कि राजभाषा के कार्यान्वयन में अपनी सहभागिता निभाएं।

संजय कुमार झा

(डॉ. संजय कुमार झा)

संरक्षक

**श्री एन. गौरी शंकर राव**
निदेशक (वित्त)

# निदेशक (वित्त) का संदेश

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। अत: यह हम सभी का संवैधानिक दायित्व है कि हम व्यावहारिक विकल्पों के माध्यम से इसके प्रचार-प्रसार में प्रयत्नशील रहें। मिधानि में सभी अधिकारी और कर्मचारी राजभाषा नीति का अनुपालन करके अपने इस संवैधानिक दायित्व का पूरी तरह से निर्वाह कर रहे हैं। साथ ही, मिधानि द्वारा अपनी छमाही गृह पत्रिका 'संकल्प' का प्रकाशन भी नियमित रूप से किया जा रहा है।

'संकल्प' पत्रिका की नियमितता बनाए रखने तथा इसके आगामी अंकों को अधिकाधिक रुचिकर बनाने हेतु आपके बहुमूल्य विचारों और सुझावों का सदैव स्वागत है। पत्रिका का प्रकाशन अनवरत इसी प्रकार आकर्षक रूप में होता रहे तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सदैव सफलता प्राप्त करे, इसके लिए समस्त रचनाकारों, हिंदी अनुभाग तथा संपादक मंडल को मेरी तरफ से हार्दिक शुभकामनाएँ।

गौरीशंकर

(एन गौरी शंकर राव)

# संरक्षक

**श्री टी. मुत्तुकुमार**
निदेशक (उत्पादन एवं विपणन)

## शुभकामना संदेश

प्रिय मित्रो,

आज मुझे आप सभी के समक्ष 'संकल्प' पत्रिका का यह अंक प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है। इस पत्रिका से कार्यालय के सदस्यों को अपनी सृजनात्मक एवं साहित्यिक प्रतिभा की अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त होता है। भाषा प्रांतों को जोड़ने का माध्यम है और हमारी संस्कृति का प्रतीक है। हिंदी भाषा ने अपनी विकास यात्रा के एक हजार से अधिक वर्षों की अवधि में अनेक चुनौतियों और संघर्षों का सामना किया है। आज हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ता जा रहा है। हिंदी एक सर्वप्रिय वातावरण प्रभावी भाषा है जो एक प्रांत के लोगों को दूसरे प्रांत के लोगों से जुड़ने में सहायक है। विशेष रूप से इसकी झलक कार्यालय में विभिन्न प्रांतों से आए हुए सदस्यों के व्यक्तित्व में प्रतिबिंबित होती है। मिधानि के सभी कर्मचारी किसी न किसी प्रकार से हिंदी भाषा के माध्यम से अपना कर्तव्य निष्पादन करने में सक्षम होते जा रहे हैं।

हम हर बार यह प्रयास करते हैं कि 'संकल्प' पत्रिका का अंक रोचक एवं ज्ञानवर्धक रहे। इस कार्य में आप सभी का सक्रिय योगदान देख कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है। हिंदी भाषा की उन्नति में आपका सीधा योगदान सराहनीय है। 'संकल्प' पत्रिका का यह अंक भी बहुत ही ज्ञानवर्धक है। मैं आशा करता हूँ कि यह नवीन अंक आप सभी को हमारे कार्यालय में हो रही दैनंदिन गतिविधियों की एक झलक प्रस्तुत करेगा।

हिंदी भाषा की उन्नति एवं प्रगति में यह कदम बहुत ही प्रशंसनीय है। मैं पत्रिका की सफलता के लिए सभी लेखकों एवं संपादन मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

(टी. मुत्तुकुमार)

## परामर्शदाता

**श्री ए. रामकृष्ण राव**
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

# महाप्रबंधक (मानव संसाधन) का संदेश

आपके समक्ष मिधानि की गृह पत्रिका 'संकल्प' का अप्रैल–सितंबर 2023 का अंक प्रस्तुत है। निश्चित ही पत्रिका का प्रकाशन सभी कर्मचारियों का एक सामूहिक प्रयास होता है जिसे वे अपनी सृजनशीलता एवं कलात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से मूर्त रूप प्रदान करते हैं। मेरा विश्वास है कि पत्रिका राजभाषा कार्यान्वयन के अलावा मिधानि में संपन्न गतिविधियों का सुंदर संग्रह होती है। साथ ही, पत्रिका कर्मचारियों की सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलूओं के प्रति उनकी भावाभिव्यक्ति से पाठकों को अवगत कराती है तथा उनका ज्ञानवर्धन करती है।

गृह पत्रिका का प्रकाशन अपने आप में ही एक अनूठा प्रयास होता है जिसमें संपादक मंडल की मेहनत तो स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती ही है साथ ही संगठन के कर्मचारियों की मनस्विता मौलिक सृजनशीलता का बोध भी होता है। मैंने अनुभव किया है कि 'ग' क्षेत्र में स्थित होने के उपरांत भी मिधानि में कार्यरत अधिकतर कर्मचारी हिंदी में बोलने में सहज महसूस करते हैं तथा अपना अधिकांश कार्यालयीन कार्य भी हिंदी में ही करते हैं।

मुझे आशा है कि गृह पत्रिका 'संकल्प' का नवीन अंक अपने पूर्व अंकों की तरह रोचक और ज्ञानवर्धक होगा। पत्रिका के अनवरत प्रकाशन के लिए संपादक मंडल और हिंदी अनुभाग को हार्दिक शुभकामनाएँ।

(ए. रामकृष्ण राव)

# संपादकीय

डॉ. बी. बालाजी
प्रबंधक

## तकनीकी का कमाल, हिंदी का प्रसार बेमिसाल

कार्यालयों में हिंदी के प्रसार में तकनीकी के प्रयोग से गति आई है। कर्मचारी ई-मेल और ई-ऑफिस में हिंदी का प्रयोग करने लगे हैं। फोनेटिक की-बोर्ड के उपयोग से टंकण नहीं जानने वाले कर्मचारी भी अब आसानी से हिंदी में टंकण कर रहे हैं। इससे कार्यालय का काम हिंदी में करना आसान हो गया है। एम एस वर्ड में वर्तनी जाँचने की सुविधा उपलब्ध है, उससे कर्मचारी हिंदी शब्दों की वर्तनी की त्रुटियाँ स्वयं ठीक कर पा रहे हैं। राजभाषा विभाग द्वारा विकसित हिंदी शब्दकोश, वाक्यांश कोश, कंठस्थ अनुवाद सुविधा से भी हिंदी में काम करने के लिए काफी मदद मिल रही है। फाइलों में पहले की तुलना में हिंदी में लिखे हुए कागज़ बढ़ रहे हैं। यह स्थिति आशाजनक है। इससे हिंदी अधिकारी की उम्मीद बढ़ रही है -

**आज नहीं तो न सही मगर देखेंगे कल,**
**अंग्रेजी से आगे जाएगी हिंदी निकल।।**

हिंदी के आकर्षण का ही नतीजा है कि एलेक्सा, ओके गूगल जैसी वॉइस (आवाज़) सहायक सेवाएँ हिंदी में भी उपलब्ध हो गई हैं। हिंदी की ताकत बढ़ाने में बोलचाल के अलावा लिखित कागज़ों की भूमिका महत्वपूर्ण होगी। इसीलिए प्रत्येक भारतीय की जिम्मेदारी है कि वे अपने देश की भाषा को बिना किसी शर्त के अपनाएँ और उसका बेझिझक उपयोग करें। तकनीक उनकी मदद के लिए तैयार है।

मिधानि में तकनीकी के प्रयोग से हिंदी में कामकाज करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। इसके प्रतीक स्वरूप संकल्प में प्रकाशित लेखों को देखा जा सकता है। अधिकारी व कर्मचारी हिंदी में लेख लिखने में रुचि दिखा रहे हैं। संकल्प के इस अंक में राजभाषा के साथ-साथ स्वास्थ्य, प्रबंधन, पर्यावरण संबंधी लेख शामिल किए गए हैं। इसके अतिरिक्त लघुकथा, फिल्म समीक्षा और धरोहर स्तंभ के अंतर्गत विभिन्न कवियों की कविताएँ भी पाठकों को पढ़ने को मिलेंगी।

आशा है, हमारा यह प्रयास संकल्प के पाठकों को पसंद आएगा। हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उन्हें आकर्षित करने में यह अंक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। सभी लेखकों व सामग्री उपलब्धकर्ताओं के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ और निवेदन करता हूँ कि वे आगे भी इसी तरह अपनी लेखन प्रतिभा से पत्रिका को समृद्ध करते रहेंगे। पत्रिका के संपादक मंडल में शामिल उच्च अधिकारियों के प्रति आभार।

(डॉ. बी. बालाजी)

# भारतीय संस्कृति के प्रसार में हिंदी की भूमिका विषय पर व्याख्यान

मिधानि में दिनांक 11 से 25 सितंबर 2023 को शब्दावली, संस्मरण लेखन, पीपीटी, हिंदी टंकण, कविता पाठ तथा प्रश्नमंच प्रतियोगिताएँ आयोजित कर हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। संस्मरण लेखन के लिए मिधानि की स्वर्ण जयंती: मेरी अपनी मिधानि और पीपीटी के लिए राजभाषा कार्यान्वयन में तकनीकी का प्रयोग विषय रखे गए थे जबकि शब्दावली प्रतियोगिता के लिए चलते-फिरते हिंदी सीखिए योजना के अंतर्गत जनवरी 2023 से अगस्त 2023 तक प्रसारित हिंदी-अंग्रेजी शब्दावली व सुविचार दिए गए। कविता पाठ प्रतियोगिता बीपीडीएवी स्कूल के छात्रों के लिए आयोजित की गई जिसमें छात्रों द्वारा देशभक्ति और पर्यावरण संबंधी कविताओं का पाठ किया गया। हिंदी पखवाड़े के दौरान सरदार वल्लभभाई पटेल के जीवन की घटनाओं पर आधारित हिंदी फिल्म सरदार (1993-हिंदी ड्रामा) दिखाई गई जिसे कर्मचारियों ने बहुत पसंद किया। हिंदी पखवाड़े के पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर भारतीय संस्कृति के प्रसार में हिंदी की भूमिका विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया।

पुरस्कार वितरण समारोह की अध्यक्षता उद्यम के निदेशक (उत्पादन एवं विपणन) टी. मुत्तुकुमार ने की थी। उन्होंने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा - भारत की सामासिक संस्कृति के प्रसार में हिंदी भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत की वैविध्यता को एकता की डोर में बांधने में भारत की राजभाषा हिंदी ने बहुत बड़ा योगदान दिया है। सांस्कृतिक विविधता की तरह ही भारत बहुल भाषी देश है। ऐसे में हिंदी भाषा भारतीय संस्कृति की साम्यता को बनाए रखने के लिए आवश्यक संस्कार प्रसारित करती है। हिंदी के माध्यम से देशभर में संचार स्थापित करना आसान है, विशेषकर अन्य भाषी समुदाय के लोगों के लिए तो यह एक वरदान है। टी. मुत्तुकुमार ने हिंदी भाषा संबंधी अपने संस्मरण सुनाते हुए आगे कहा कि भारत की सांस्कृतिक विविधता और बहुभाषिकता ही उसकी पहचान है। यहाँ की भाषाएँ समृद्ध हैं। इन भाषाओं में अपार ज्ञान संपदा संग्रहित है। इस ज्ञान संपदा को बहुभाषी जनमानस के लिए सुलभ्य बनाने हेतु हिंदी में अनुवाद बहुत बड़ा माध्यम है। हिंदी भाषा के कारण कश्मीर से कन्याकुमारी और असम से गुजरात तक की यात्रा आसान हो जाती है। लोगों में संचार स्थापित करने में आसानी होती है। उन्होंने कहा कि तमिल भाषी होते हुए भी मैंने अपने बच्चों को हिंदी प्रथम भाषा के रूप में सिखवाई। तमिलनाडु में भी हिंदी के लिए महौल बन रहा है। वहाँ की जनता हिंदी की आवश्यकता और महत्व को समझने लगी है।

इस अवसर पर भारतीय संस्कृति के प्रसार में हिंदी की भूमिका विषय पर व्याख्यान देते हुए समारोह के मुख्य अतिथि, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के

*गुणता प्रबंधन विभाग को मिधानि राजभाषा गरिमा पुरस्कार प्रदान करते हुए श्री टी. मुत्तुकुमार, नि. (उ.एवं वि.)*

क्षेत्रीय निदेशक (हैदराबाद) डॉ. गंगाधर वानोडे ने कहा कि भारत की संस्कृति लोक संस्कृति है। उसकी आत्मा गाँव में बसती है और गाँवों में ही उसकी संस्कृति की जड़ है। शहरों में तो धुआँ हैं, शोर है, दिखावट की चकाचौंध है। भारत की सांस्कृतिक ऊर्जा और उर्वरता का आधार उसके मानस में रचे-बसे लोकतत्व हैं। लोक जन जीवन के अभाव में उसकी संस्कृति नष्ट हो सकती है। किंतु भारत के जनमानस की आत्मा में घुले-मिले लोकतत्व उसकी सांस्कृतिक चेतना को जागृत बनाए रखने में सक्षम है। डॉ. वानोडे ने व्याख्यान के दौरान बताया केंद्रीय हिंदी संस्थान हिंदी के माध्यम से देश तथा विश्वभर में भारतीय संस्कृति को प्रसारित करने का महत्तर कार्य कर रहा है।

समारोह में हिंदी दिवस 2023 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के दौरान मिधानि के कर्मचारी रोहित और अबिनाश साहू द्वारा गीत गायन तथा डॉ. बी. बालाजी, प्रबंधक (हिंदी अनुभाग एवं निगम संचार) द्वारा कविता पाठ किया गया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में रत्नकुमारी, अवर कार्यपालक (हिंदी), उदयाश्री, सहायक (मा.संसा.) तथा कोमल टंडन, प्रबंधन प्रशिक्षु (मा.संसा.) का सक्रिय योगदान रहा। समारोह का समापन राष्ट्रगान से हुआ।

*गायक कलाकार श्री अबिनाश साहू और श्री रोहित बाखला मुख्य अतिथि व अध्यक्ष से उपहार ग्रहण करते हुए*

*श्री पॉल अंटोनी, कंपनी सचिव निर्णायक के रूप में उपहार ग्रहण करते हुए। उन्होंने पीपीटी के लिए निर्णायक की भूमिका निभाई थी।*

# हिंदी दिवस 2023 के उपलक्ष्य में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करने की झलकियाँ

ईश्वर प्रसाद

सुरेश रेड्डी

सरस्वती चंद्र

के. सतीश कुमार

हिमांशु गुप्ता

बी.मु. रसूलमिनया

राज कुमार साहू

जी. कल्पना

धर्मेंद्र कुमार

के. अदिनारायणा

कोमल टंडन

अमरजीत कुमार सिंह

उमेन्द्र सिंह

डी. रतीराम नायक

# पुरस्कार विजेताओं की सूची

| क्र.सं. | कर्मचारी का नाम, पदनाम, विभाग | पुरस्कार |
|---|---|---|
| 1 | ईश्वर प्रसाद, प्रबंधक, वाइड प्लेट मिल | शब्दावली-I, संस्मरण लेखन-I एवं पीपीटी-I |
| 2 | सुरेश रेड्डी जी., कनि.कार्य.अ., एएमटीएल | हिंदी टंकण-I, पीपीटी-I |
| 3 | सरस्वती चंद्र, वरि. सहायक, गुणता प्रबंधन | शब्दावली-I, प्रश्नमंच-II |
| 4 | के सतीश कुमार, मास्टर तकनीकी सहायक, गुणता प्रबंधन | संस्मरण लेखन-I, प्रश्नमंच-III |
| 5 | हिमांशु गुप्ता, प्रबंधन प्रशिक्षु | प्रश्नमंच-I, शब्दावली-III |
| 6 | बी.मु. रसूलमिनया, प्रबंधन प्रशिक्षु | हिंदी टंकण-III, प्रश्नमंच-II |
| 7 | डॉ जी आर प्रवीण ज्योति, वरि.प्रबंधक, चिकित्सा सेवाएँ | संस्मरण लेखन-III |
| 8 | राज कुमार साहू, मास्टर तकनीकी सहायक, यूटीलिटिस | संस्मरण लेखन-I |
| 9 | जी कल्पना, तकनीशियन-II, गुणता प्रबंधन | संस्मरण लेखन-II |
| 10 | धर्मेन्द्र कुमार, कनि. तकनीशियन-II, वाइड प्लेट मिल | संस्मरण लेखन-III |
| 11 | के अदिनारायणा, कनि. सहायक, गुणता प्रबंधन | हिंदी टंकण-I |
| 12 | कोमल टंडन, प्रबंधन प्रशिक्षु | पीपीटी-II |
| 13 | अमरजीत कुमार सिंह, प्रबंधन प्रशिक्षु | पीपीटी-III |
| 14 | उमेन्द्र सिंह, तकनीकी सहायक, वाइड प्लेट मिल | पीपीटी-I |
| 15 | डी. रतीराम नायक, उप प्रबंधक, गुणता प्रबंधन | पीपीटी-II |
| 16 | देवांशु शर्मा, प्रबंधन प्रशिक्षु | प्रश्नमंच-II |
| 17 | गोबिंद चन्द्र दाश, प्रबंधन प्रशिक्षु | प्रश्नमंच-II |
| 18 | मुहसीन एम.के.पी., उप प्रबंधक, गुणता प्रबंधन | प्रश्नमंच-III |
| 19 | सौरभ कुमार शाक्य, उप प्रबंधक, गुणता प्रबंधन | प्रश्नमंच-III |
| 20 | हरीश कुमार देवांगन, मास्टर तकनीकी सहायक, गुणता प्रबंधन | प्रश्नमंच-III |
| 21 | अहमर आलम, सहायक प्रबंधक, पीपीडी | प्रश्नमंच-I |
| 22 | सोहम दीपक सिंह, प्रबंधन प्रशिक्षु | प्रश्नमंच-I |
| 23 | तेजवंत सिंह बरेजा, कनिष्ठ फायर निरीक्षक, रोहतक | संस्मरण लेखन-I |
| 24 | संतोष कुमार बारीक, तकनीकी सहायक, रोहतक | संस्मरण लेखन-II |
| 25 | बिभुप्रसाद बिसवाल, कनिष्ठ तकनीशियन II, रोहतक | संस्मरण लेखन-III |
| 26 | विनय कुमार, वरिष्ठ सहायक, रोहतक | संस्मरण लेखन-I |
| 27 | हेसामुद्दीन, वरिष्ठ तकनीकी सहायक, रोहतक | संस्मरण लेखन-II |
| 28 | शुभम कुमार, कनिष्ठ तकनीशियन II, रोहतक | संस्मरण लेखन-III |

# हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

मिधानि की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में कर्मचारियों के लिए अप्रैल से सितंबर 2023 तक कुल पाँच एक दिवसीय हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। हिंदी कार्यशालाओं के माध्यम से कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रुचि जगाने का प्रयास किया गया। पाँच हिंदी कार्यशालाओं में नगरद्वय के प्रतिष्ठित संगठनों के भाषा कर्मियों व हिंदी अधिकारियों द्वारा राजभाषा के रूप में हिंदी का महत्व, राजभाषा कार्यान्वयन क्यों और कैसे, राजभाषा और टिप्पणी लेखन, कार्यालय में प्रयुक्त प्रशासनिक शब्दावली एवं संक्षिप्त टिप्पण, राजभाषा के रूप में हिंदी का चयन एवं कार्यान्वयन, राजभाषा के कार्यान्वयन में उपयोगी प्रशासनिक शब्दावली जैसे राजभाषा कार्यान्वयन के लिए उपयोगी विषयों के साथ-साथ अन्य सामान्य विषयों जैसे अपने मन के साथ बेहतर संबंध बनाएँ और एक ऐसा जीवन जो अधिक सार्थक और उद्देश्यपूर्ण हो विषयों पर व्याख्यान आयोजित किए गए।

दक्षिण केंद्र रेलवे की वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी डॉ. रानी गीतेश काटे, राजभाषा के रूप में हिंदी का चयन एवं कार्यान्वयन विषय पर व्याख्यान देते हुए

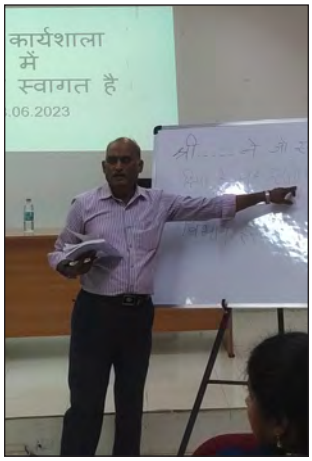


ईएसआई हैदराबाद के सहायक निदेशक (रा.भा.) (से. नि.) दिनेश सिंह, कार्यालय में प्रयुक्त प्रशासनिक शब्दावली एवं संक्षिप्त टिप्पण विषय पर अपने विचार प्रकट करते हुए

आरसीआई के सहायक निदेशक (राजभाषा) काज़िम अहमद राजभाषा कार्यान्वयन क्यों और कैसे विषय पर व्याख्यान देते हुए

उच्च शिक्षा एवं शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद केंद्र के डॉ. ऋषभदेव शर्मा, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष (से.नि.) राजभाषा के रूप में हिंदी का महत्व विषय पर व्याख्यान देते हुए

इस्कॉन हैदराबाद के गीता संदेश प्रबंधक श्री हर्ष वैद्य एक ऐसा जीवन जो अधिक सार्थक और उद्देश्यपूर्ण हो विषय पर व्याख्यान देते हुए

डॉ. अर्चना पांडेय, सहायक निदेशक (राजभाषा), डीआरडीएल राजभाषा और टिप्पणी लेखन पर विचार व्यक्त करते हुए

# भाषा, राष्ट्र की अस्मिता होती है

डॉ. संजय कुमार झा
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

इतिहास साक्षी है, भारत अपनी भाषा, संस्कृति, कला तथा विज्ञान के लिए जाना जाता रहा है। भारत की विशेष पहचान थी। लेकिन ऐसा क्या हुआ कि हमारी जन्मभूमि भारत इन्हीं क्षेत्रों में पिछड़ गया? हाँ, यह सही है कि हम आज भी हमारी संस्कृति-कला के कारण कभी चर्चा तो कभी सम्मान के पात्र बनते हैं। लेकिन भाषा और विज्ञान के क्षेत्र में पूर्व के समान ख्याति पुनः प्राप्त करने हेतु सशक्त प्रयास करने की आवश्यकता है। यह प्रयास हिंदी के माध्यम से सफल हो सकता है। गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर ने कभी कहा था - हिंदी भारतीय भाषाओं की मध्य मणि है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि हिंदी भारत के जीवन मूल्यों और संस्कारों की संवाहक है। यह भारत के जनमानस की सामासिक संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है।

भाषा ऐसा प्रमुख माध्यम है, जिस पर राष्ट्र की अस्मिता आश्रित होती है। अपनी भाषा व शिक्षा पद्धति के लिए भारत विश्व प्रसिद्ध रहा है। भाषिक एवं सांस्कृतिक रूप से भारत एक बेहद समृद्ध राष्ट्र है। भारत की विभिन्न भाषाएँ भले ही अलग-अलग सामाजिकता का वहन करती हैं किंतु सांस्कृतिक रूप ये सभी एक-दूसरे की ताकत हैं। भारतीय भाषाओं की विविधताओं में हिंदी को एक सेतु के रूप में विशिष्ट स्थान प्राप्त है। यही कारण है कि संविधान निर्माताओं ने सर्वसम्मति से इसे भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकृती दी थी। देश के अधिकांश हिस्सों में हिंदी बोली और समझी जाती है। राजभाषा के रूप में स्थापित किए जाने के बाद कार्यालयी कामकाज के लिए इसे लोकप्रिय बनाने हेतु राजभाषा विभाग द्वारा विविध योजनाएँ जारी की गई। कर्मचारीगण उन योजनाओं का लाभ उठाते हुए राजभाषा हिंदी में पारंगत होने लगे हैं। इससे कार्यालयों में हिंदी के लिए सकारात्मक वातावरण बनता जा रहा है। निर्धारित लक्ष्य की ओर हम बढ़ रहे हैं।

मिधानि ने राजभाषा को प्रारंभ से ही पूर्ण हृदय के साथ अपनाया है। अब तक मिधानि की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 156 बैठकें हो चुकी हैं। मिधानि के अधिकतर कर्मचारी हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं, जिस कारण मिधानि को भारत के गजट में अधिसूचित किया जा चुका है। इससे हम हिंदी को अपनी कार्य-संस्कृति का अभिन्न अंग बनाने में सफल हुए हैं। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की सभी योजनाएँ और प्रशिक्षण कार्यक्रम मिधानि में नियमित रूप से लागू किए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त, मिधानि प्रबंधन ने भी अपनी ओर से कई ऐसी योजनाओं का कार्यान्वयन किया है जो उद्यम में राजभाषा के प्रचार-प्रसार को बल प्रदान कर रही हैं। जैसे हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विभाग को रोलिंग ट्रॉफी से सम्मानित करना और तकनीकी लेखन को प्रोत्साहित करने के लिए मिधानि राजभाषा गौरव पुरस्कार प्रदान करना, हिंदी में उत्कृष्ट अंक प्राप्त करने वाले स्कूल के छात्रों को पुरस्कार आदि।

मेरा व्यक्तिगत मत है कि भाषा के माध्यम से कोई भी राष्ट्र उन्नति के पथ पर आगे बढ़ सकता है। विश्व के विकसित देशों ने अपनी भाषा के बल पर ही विकसित राष्ट्र होने का गौरव प्राप्त किया है। जब हम सभी हिंदी भाषा का अपने कार्यालयीन कार्यों में अधिक-से-अधिक प्रयोग करेंगे, तकनीकी के क्षेत्र में प्रयोग करेंगे तब भारत की भी उन विकसित राष्ट्रों की कतार में शामिल होने की संभावनाएँ बढ़ जाएँगी। इसमें सबसे महत्वपूर्ण भूमिका केंद्र सरकार के कार्यालयों में कार्यरत कर्मचारियों की होगी। केंद्र सरकार के कार्यालयों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपने कार्यालयी कार्यों में राजभाषा का अधिकतम प्रयोग करें और उसका प्रचार-प्रसार भी करें ताकि हिंदी राजभाषा से आगे बढ़कर अंतरराष्ट्रीय भाषा बनने की ओर अग्रसर हो।

प्रत्येक संगठन में विभिन्न प्रांतों और भाषा समुदायों के लोग अपनी सेवाएं प्रदान करते हैं। राजभाषा के रूप में हिंदी कार्यस्थल पर बहुभाषी जनशक्ति के मध्य संप्रेषण का एक प्रमुख माध्यम बनी है। यह हिंदी भाषा को किसी भी भाषिक वर्ग द्वारा सहजता से आत्मसात कर पाने की वजह से ही संभव हो पाया है। वर्तमान समय में शिक्षा, शोध, ज्ञान-विज्ञान, वेब और सोशल मीडिया हर जगह हिंदी अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रही है। यह हिंदी को अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित करने के प्रयासों के लिए शुभ संकेत है।

# राजभाषा कार्यान्वयन में तकनीकी का प्रयोग

ईश्वर प्रसाद
प्रबंधक (डब्ल्यूपीएम)

**'निजभाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल/बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल'**

– भारतेंदु हरिश्चंद्र

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र की उपर्युक्त पंक्तियों को चरितार्थ करते हुए संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को भारत की राजभाषा स्वीकार किया। इसी दिन को प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

राजभाषा का तात्पर्य उस भाषा से है जिस भाषा का प्रयोग प्रशासनिक कार्यों और सरकारी कामकाज में किया जाता है। सामान्य अर्थों में कहें तो सरकारी दफ्तरों में कामकाज की भाषा को राजभाषा कहते हैं।

अब बात करते हैं 'राजभाषा कार्यान्वयन' की। 'राजभाषा कार्यान्वयन' का तात्पर्य है राजभाषा नीति के बारे में जानकारी देकर विभिन्न कार्यक्रमों एवं कार्यकलापों के माध्यम से कार्मिकों में जागरुकता एवं संवेदना का निर्माण करना ताकि हिंदी को पूरे देश में कामकाज की भाषा बनाकर देश को एकता के सूत्र में पिरोया जा सके।

उपर्युक्त लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आज के आधुनिक युग में, जोकि सूचना प्रौद्योगिकी का युग है, ये आवश्यक हो जाता है कि तकनीकी विकास के स्तर पर जारी बदलावों को हर स्तर पर आत्मसात किया जाए।

अत: ये आवश्यक हो जाता है कि राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए आधुनिक तकनीक को अपनाया जाए ताकि सभी सरलता के साथ हिंदी में कामकाज कर सकें। इसके लिए सूचना प्रौद्योगिकी एक सरल तंत्र है जो तकनीकी प्रयोग के सहारे सूचनाओं का संकलन, प्रक्रिया व संप्रेषण करता है।

कंप्यूटर के क्षेत्र में जो विकास हुआ है वह भाषा के क्षेत्र में भी मौन क्रांति का वाहक बन कर आया है।

सभी कार्यालयों में तमाम कार्य कंप्यूटरों पर ही किए जाते हैं। रोजमर्रा की जिंदगी मानो सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित है। मोबाइल फोन, एप, इंटरनेट बैंकिंग, टिकट बुकिंग से लेकर ऑनलाइन शॉपिंग तक सूचना प्रौद्योगिकी हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है।

अत: ये कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि समकालीन समय में सूचना प्रौद्योगिकी जिसकी आत्मा कंप्यूटर है, किसी भी अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी बना हुआ है। यह सर्वज्ञात है कि कंप्यूटर ने राजभाषा हिंदी को सीखना व कार्य करना सुगम बनाया है।

इसकी महत्ता पर प्रकाश डालने हेतु निम्नलिखित कुछ प्रमुख तकनीक पर ध्यान देना जरुरी है।

* भाषा सीखने के डिजिटल मंच:'डुओलिंगो' और 'रोसेटा-स्टोन' जैसे डिजिटल भाषा सीखने के प्लेटफॉर्मों ने हिंदी सीखना अधिक सुलभ और सुविधाजनक बना दिया है। ये प्लेटफॉर्म शिक्षार्थियों को भाषा को प्रभावी ढंग से समझने में मदद करने के लिए इंटरेक्टिव पाठ, प्रश्नोत्तरी और उच्चारण अभ्यास प्रदान करते हैं। कई तरह के खेल और वैयक्तिक शिक्षण के माध्यम से ये प्लेटफॉर्म हिंदी भाषा सीखने को आकर्षक और मनोरंजक बनाते हैं।
* भाषा अनुवाद उपकरण: गूगल अनुवाद और सी-डैक द्वारा विकसित 'कंठस्थ' जैसे अनुवाद टूल्स ने हिंदी में संचार को सरल बना दिया है। ये उपकरण हिंदी और अन्य भाषाओं के बीच त्वरित अनुवाद को सक्षम करते हैं। साथ ही साथ अंतर-सांस्कृतिक संचार की सुविधा प्रदान करते हैं और भाषा की बाधाओं को तोड़ते हैं।

* ऑनलाइन हिंदी भाषा संसाधन: हिंदी के व्यापक बाजार को देखते हुए अग्रणी माइक्रोसॉफ्ट ने अपने सॉफ्टवेयर उत्पादों को हिंदी में उपलब्ध कराने के प्रयत्न शुरु किए हैं। बहुप्रचलित 'विंडोज' जैसे ऑपरेटिंग सिस्टम के साथ एम एस वर्ड, पावर प्वाइंट, एक्सेल, नोट पैड, एक्सप्लोरर जैसे प्रमुख सॉफ्टवेयर उत्पाद अब हिंदी में कार्य करने की सुविधा प्रदान करते हैं। माइक्रोसॉफ्ट का लैंग्वेज इंटरफेस पैकेज स्थानीयकरण का बेहतर उदाहरण है। भारत सरकार के राजभाषा विभाग ने भी हिंदी के प्रचार-प्रसार को आसान बनाने के उद्देश्य से हिंदी में कई सॉफ्टवेयर उपलब्ध कराए हैं, जिनमें से निम्नलिखित प्रमुख है:

  अ) लीला सॉफ्टवेयर (LILA)-Learn Indian Language with Artificial Intelligence

  आ) मंत्र अर्थात Machine Assisted Translation Tool

  इ) श्रुतलेखन-हिंदी स्पीच रिकग्नीशन सिस्टम

  ई) वाचांतर इत्यादि।

* हिंदी भाषा संरक्षण: डिजिटलाइजेशन के द्वारा हिंदी भाषा और संस्कृति को आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखा जा सकता है। डिजिटल अभिलेखागार, ऑनलाइन पुस्तकालय और ऑडियो रिकॉर्डिंग जैसे टूल्स के माध्यम द्वारा हम साहित्यिक कृतियों, ऐतिहासिक दस्तावेजों और मौखिक परंपराओं को संरक्षित रख सकते हैं।

* हिंदी भाषा की-बोर्ड और इनपुट विधियाँ: हमारे मोबाइल फोन व कंप्यूटर में हिंदी की-बोर्ड की उपलब्धता ने हिंदी में टाइप करना अधिक सुविधाजनक बनाया है। ये उपकरण उपयोगकर्ता को आसानी से हिंदी और अन्य भाषाओं में स्विच करने की सुविधा प्रदान करते हैं, जिससे हिंदी में डिजिटल संचार को बढ़ावा मिलता है।

* सोशल मीडिया में हिंदी भाषा: फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों ने हिंदी भाषा को अपना लिया है जिससे उपयोगकर्ता को पोस्ट करने, पोस्ट साझा करने और संवाद करने में आसानी होती है। इससे हिंदी भाषियों को अपनी बात कहने में, अपनी संस्कृति को पहचान और बढ़ावा देने में तथा सामुदायिक निर्माण करने में सक्षमता मिली है।

* चुनौतियाँ और भविष्य की संभावनाएँ:हालांकि प्रौद्योगिकी ने हिंदी भाषा के कार्यान्वयन को बहुत आसान बना दिया है। लेकिन चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई है।

राजभाषा के संपूर्ण देश में प्रचार-प्रसार के लिए लिपि अनुकूलता, भाषाई विविधता और प्रौद्योगिकी तक आमजन की आसान पहुँच जैसे मुद्दों पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

तथापि कृत्रिम बुद्धि (AI) और आवाज पहचान (VR) में प्रगति के साथ भविष्य में राजभाषा कार्यान्वयन को और बढ़ाने की आशाजनक संभावनाएँ हैं।

## उत्पादों की प्रदर्शनी में सहभागिता

*06.07.2023 को बैंगलोर में आयोजित चौथे अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था नेतृत्व कार्यक्रम में मिधानि ने अपने उत्पादों की प्रदर्शनी लगाई। इस अवसर पर डॉ.जितेंद्र सिंह, विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और श्री अमिताभ कांत, भारत के जी20 शेरपा, ने मिधानि के स्टॉल का दौरा किया। श्री पी बाबू, अपर महाप्रबंधक (विपणन) ने गणमान्य व्यक्तियों को भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम में मिधानि के योगदान के बारे में जानकारी दी।*

# भारतीय संस्कृति के प्रसार में हिंदी की भूमिका

**डॉ. गंगाधर वानोडे**
क्षेत्रीय निदेशक,
केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैद्राबाद

हम सब जानते हैं कि भारत एक बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक देश है। ऐसा होते हुए भी भारत की विविधता में एकता की अपनी एक अलग पहचान है। इसी के कारण भारत की अमूल्य धरोहर का विश्वभर में नाम है। भारत में कई भाषाएँ बोली जाती हैं। भारत के अधिकतर राज्यों में हिंदी भाषा और उसकी बोलियाँ बोली जाती हैं। हर बोलियों की अपनी एक खासियत है। उसके बोलने की अपनी-अपनी शैलियाँ हैं। भारत में हिंदी भाषा बोलने, समझने, पढ़ने, लिखने वालों की संख्या अधिक है। हर भाषा अपने समाज के साथ जुड़ी होती है तथा भाषा के साथ उसकी संस्कृति जुड़ी होती है। एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे विश्व भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में हैं।

हमारी भारतीय संस्कृति गाँवों में बसती है। आज भी गाँवों में सारे तीज-त्यौहार उत्सव मनाए जाते हैं जो हमारे पूर्वजों के जमाने से चले आ रहे हैं। संस्कृति से संबंधित खान-पान, तीज-त्यौहार, खेल-कूद, नाच-गाने, पहनावा, सजावट, आदि आज भी हम गाँवों में बड़े उत्साह से दिल लगाकर मनाते हुए देखते हैं।

शहर में रहने वाले लोग अपने परिवार के सदस्यों के साथ तीज-त्यौहारों को मनाने के लिए अपने-अपने गाँव जाते हैं। शहर में रहने वाले नई पीढ़ी के बच्चों को इसकी जानकारी हो इसलिए वे तीज-त्यौहार उत्सव मनाने अपने-अपने गाँव जाते हैं। हम यह भी देखते हैं कि छठ पूजा का त्यौहार उत्तर प्रदेश, बिहार के समुदाय बड़े धूम-धाम से मनाते हैं। इन राज्यों के लोग अपनी-अपनी उपजीविका को चलाने के लिए भारत भर में प्रत्येक राज्य में मौजूद है। कुछ लोग अपने प्रदेश में नहीं जा सकते इसलिए वे जहाँ रहते हैं, काम करते हैं, वहीं पर इस त्यौहार को मनाते हैं। त्यौहार, पूजा से संबंधित लोकगीत, लोकनृत्य, लोककथाएँ उनके जीवन का हिस्सा हैं। इसी तरह प्रत्येक भाषा के समुदाय के लोग अपने-अपने क्षेत्र में जाकर अपने-अपने तीज-त्यौहार बड़े धूम-धाम से मनाते है। त्यौहार लगभग एक जैसे ही होते हैं, नाम बदल जाते हैं, उसे मनाने की कुछ पद्धतियाँ बदल सकती हैं। क्षेत्र विशेष के अनुसार खान-पान, पहनावा बदल सकता है परंतु सबका उद्देश्य एक ही होता है। परिवार और समाज की प्रसन्नता।

भारतीय संस्कृति में आश्रम-व्यवस्था के साथ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जैसे चार पुरुषार्थों का विशिष्ट स्थान रहा है। भारतीय संस्कृति विश्व में सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति मानी जाती है। भारत की संस्कृति आदिकाल से ही अपने परंपरागत अस्तित्व के साथ अजर-अमर बनी हुई है। आध्यात्मिकता एवं भौतिकता का समन्वय, अनेकता में एकता, ग्रहणशीलता, प्राचीनता, निरंतरता, लचीलापन एवं सहिष्णुता, वसुधैव कुटुंबकम की भावना, लोकहित और विश्व-कल्याण तथा पर्यावरण संरक्षण ये भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ हैं। इनका संरक्षण आज हिंदी के माध्यम से संभव है। चित्रकारी के साथ-साथ यूट्यूब पर वीडियों के रूप में, डाक्यूमेंट्री फिल्म के रूप में एवं लिखित साहित्य में ये संरक्षित हो रहे हैं। इन जन संचार माध्यमों में हिंदी भाषा के प्रयोग से अधिक लोगों तक इनकी पहुँच हो पा रही है। न केवल देश बल्कि विदेशों में भी भारतीयता और उसकी संस्कृति की पहुँच बढ़ रही है।

भारत में हिंदी भाषा बोलने वाले लोग, समुदाय बहुत हैं। उन विभिन्न समुदायों की भी अपनी-अपनी बोलियाँ/उपभाषाएँ हैं। उनके भी अपने तीज-त्यौहार, उत्सव, रीति-रिवाज, पहनावा, खान-पान, पूजा-पाठ, रस्म अदायगी, लोकगीत, लोकनृत्य आदि भिन्न-भिन्न हैं। फसल लगाते समय, फसल उगाते/काटते समय गीत, शादी-ब्याह के गीत, विभिन्न ऋतु पर्व आदि के समय गीत गाए जाते रहे हैं। यदि वर्षा (बारीश) आने में समय लग जाए तो उस समय भी विशिष्ट प्रकार का पूजा-पाठ किया जाता है। इसके साथ हरेक भारतीय की अपनी आस्थाएँ जुड़ी हुई हैं। भारत के बहुत से बुद्धिजीवी लोग विश्व के विभिन्न देशों में उपजीविका के लिए गए हैं और वहीं पर बस गए हैं। वे लोग भी भारतीय संस्कृति का प्रसार कर रहे हैं। अपने नए पीढ़ी के बच्चों को इसकी जानकारी भी देते हैं। इन परंपराओं को जीवित रखने में हिंदी भाषा तथा भारतीय भाषाओं का, उसके बोलने वालों का बहुत बड़ा योगदान है।

**डॉ. बी. बालाजी**
प्रबंधक
(हिंदी अनुभाग एवं निगम संचार)

# प्रारंभिक जीवन सहायता जीवनदान की एक तकनीक

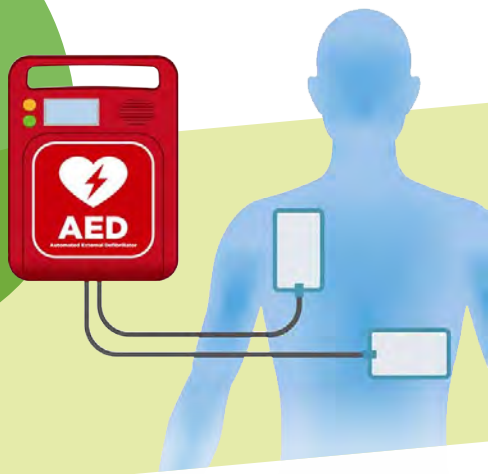


मनुष्य का जीवन अद्भुत है। जीवन है तो मरण भी है। मनुष्य की मृत्यु बहुत से कारणों से हो सकती है। किंतु कुछ स्थितियों में मनुष्य के जीवन को समाप्त होने से बचाया जा सकता है। उसे पुनः जीवन प्रदान किया जा सकता है। यदि किसी मनुष्य की दुर्घटना होती है या हृदय घात होता है तो ऐसी स्थिति में उसे मरने से बचाने का प्रयास किया जा सकता है। इस प्रयास के लिए मनुष्य के शरीर विज्ञान की थोड़ी जानकारी होने से आपात कालीन परिस्थिति में प्राथमिक चिकित्सा उपलब्ध कराकर मरते हुए को बचाया जा सकता है। उसे जीवनदान दिया जा सकता है। इस प्रक्रिया को **बेसिक लाइफ सपोर्ट या प्रारंभिक जीवन सहायता** कहते हैं।

मान लीजिए आप कहीं जा रहे हैं। घर पर हैं। अपने कॉलनी में हैं। आपने देखा कि कोई व्यक्ति आपके सामने अचानक बेहोश हो गया। कारण कुछ भी हो सकता है। जैसे कि कोई अचानक सड़क दुर्घटना ग्रस्त होना, हृदय की गति का रुकना, पानी में डूबना, बिजली का झटका लगना, आग में झुलसना आदि। इन परिस्थितियों में हृदय की धड़कन बंद होने या अनियंत्रित होने से व्यक्ति बेहोश हो जाता है या मरणासन्न हो जाता है। इस स्थिति से ग्रस्त व्यक्ति की साँस व रक्त संचार को फिर से गतिमान बनाने की आपातकालीन प्रक्रिया को वैज्ञानिक भाषा में कार्डियोपल्मोनरी रिससिटेशन (सीपीआर) कहते हैं। आप बेहोश व्यक्ति को होश में लाना चाहते हैं। अपने सामान्य ज्ञान के आधार पर उसे जगाने की कोशिश करते हैं। ऐसा करने के लिए यदि आपको सीपीआर का थोड़ा ज्ञान हो तो आप यह कार्य आसानी से कर पाएँगे।

https://www.youtube.com/watch?v=n7kqiAu2gC8

## सामान्यतः सीपीआर के दो चरण हैं:

1. प्रारंभिक जीवन सहायता (Basic Life Support): यह प्रक्रिया अस्पताल के बाहर दुर्घटना स्थल पर बिना किसी उपकरण के या न्यूनतम उपकरणों की सहायता से की जा सकती है। इसे करने के लिए किसी चिकित्सक का होना जरूरी नहीं है। जरूरी है तो बस सीपीआर करने की सही प्रक्रिया का ज्ञान।
2. उन्नत जीवन सहायता (Advance Life Support): यह सहायता बेहोश हुए व्यक्ति या मरीज को अस्पताल में लाने के बाद की जाती है। इसमें विभिन्न उपकरणों व दवाइयों का उपयोग होता हैं। इस कार्य के लिए चिकित्सक होना या चिकित्सा का ज्ञान होना अति आवश्यक है। यह कार्य डॉक्टरों की देखरेख में किया जाता है।

इस लेख में प्रारंभिक जीवन सहायता के संबंध में संक्षिप्त चर्चा की जा रही है। इस लेख को पढ़कर **बेसिक लाइफ सपोर्ट की सामान्य जानकारी हासिल कर सकते हैं। साथ ही यह भी आवश्यक है कि इसमें विशेषज्ञता के लिए प्रमाणित प्रशिक्षक से प्रशिक्षण लेना बेहतर होगा।**

## प्रारंभिक जीवन सहायता (Basic Life Support):

https://www.youtube.com/watch?v=hEjeSRhFFHE

किसी व्यक्ति के हृदय की धड़कन अचानक बंद होने पर (Sudden cardiacarrest, SCA) या फिर अनियंत्रित (Fibrillation) होने पर उस व्यक्ति के शरीर के विभिन्न अंगों को जीवित रखने वाला रक्त प्रवाह बंद हो जाता है। इसके परिणाम स्वरूप शरीर में जीवनदायिनी आक्सीजन की कमी होने लगती है। धीरे-धीरे पहले मस्तिष्क, फिर एक-एक कर सारे अंग मृत होने लगते हैं। ऐसे में यदि जल्द से जल्द प्राथमिक चिकित्सा की प्रक्रिया आरंभ की जाए और रोगी को अस्पताल तक पहुंचा दिया जाए तो अन्य अंगों को न केवल हानि से बचाया जा सकता है बल्कि एक बहुमूल्य जीवन की रक्षा भी की जा सकती है। इस प्राथमिक चिकित्सा प्रक्रिया को प्रारंभिक जीवन सहायता **(बेसिक लाइफ सपोर्ट** Basic Life Support - **बीएलएस)** कहा जाता है। इससे बिना किसी चिकित्सकीय उपकरणों और दवाइयों के दुर्घटना ग्रस्त व्यक्ति को जीवनदान दे सकते हैं।

## आइए जानते हैं, प्रारंभिक जीवन सहायता (बीएलएस) कब और कैसे करना चाहिए?

हमारे शरीर को जीवित रखने के लिए तीन महत्वपूर्ण अंग हैं। ये सदैव क्रियाशील रहते हैं:- मस्तिष्क, हृदय, और फेफड़े। इन तीनों को हमेशा क्रियाशील रखने के लिए तथा इनके साथ शरीर के अन्य अंगों को सक्रिय अर्थात जीवित रखने के लिए प्राण वायु (आक्सीजन) की आवश्यकता होती है। जब कभी इन तीन महत्वपूर्ण अंगों को किसी कारणवश प्राण वायु नहीं मिलती है, तो व्यक्ति बेहोश हो जाता है। हृदय की गति रुक जाती है। मस्तिष्क और फेफड़ों की क्रियाशीलता बाधित होती है। इससे व्यक्ति की मृत्यु होने की संभावना बढ़ जाती है। ऐसी स्थिति में ही बीएलएस की जरूरत पड़ती है।

## सामान्यतः बीएलएस के चार चरण हैं:

1) छाती के बीचों बीच दबाव डालकर हृदय को गतिमान करना (External Cardiac Compression)

2) हृदय संपीड़न (Cardiac compression)

3) श्वास मार्ग से अवरोध हटाना, श्वास मार्ग को खोलना और नियंत्रित करना (Triple Airway Manoeuvre)

4) कृत्रिम श्वास देना: मुख से मुख या मुख से मास्क द्वारा कृत्रिम श्वास देकर आक्सीजन को फेफड़ों तक पहुँचाना। इसके अतिरिक्त अंबू बैग यंत्र (Ambu Bag Mask Device) से भी कृत्रिम श्वास दी जा सकती है

पॉकेट मास्क
(Pocket Mask)

अंबु बैग
(Ambu Bag)

बागंड मास्क डिवाईस
(Bagand Mask Device)

आटोमैटिक एक्सटर्नल डिफाईब्रिलेटर
(Automatic External Defibrillator)

* मुख द्वारा कृत्रिम श्वास देने से श्वास देने वाले की सांस की आक्सीजन मरीज़ के फेफड़ों तक पहुँचती है। इससे रोगी को अस्पताल पहुँचने तक जीवित रखा जा सकता है।
* अंबू बैग से वातावरण की हवा में उपस्थित आक्सीजन को रोगी के फेफड़ों तक पहुंचाया जा सकता है।
* यदि आवश्यकता पड़े तो आटोमैटिक एक्सटर्नल डिफाईब्रिलेटर (Automatic External Defibrillator-AED) का प्रयोग करके हृदय को शॉक (Shock) देकर उसकी गति को सुचारु रूप से चालू किया जाता है। आजकल एयरपोर्ट, रेलवे स्टेशन, शापिंग मॉल इत्यादि कई सार्वजनिक स्थानों पर एईडी की व्यवस्था की जा रही है। ताकि इसका उपयोग आपातकालिन स्थिति में किया जा सके और बेहोशी की अवस्था में पहुँचे व्यक्ति की जान बचाई जा सके।

## हृदय की धड़कन दो प्रकार से रुक जाती है:

क) हृदय की धड़कन या गति बिलकुल रुक जाती है। इसे सिस्टोलिक कार्डिएक अरेस्ट (Systolic Cardiac Arrest) कहते हैं।

ख) हृदय में गति तो होती है लेकिन वह बहुत ही कम होती है। कम गति होने पर हृदय रक्त को प्रवाहित करने में असमर्थ हो जाता है। इस स्थिति को फाइब्रिलेटरी कार्डिएक अरेस्ट (Fibrillatory Cardiac Arrest) कहते हैं।

पहली स्थिति (क) में छाती पर दबाव डालकर (Cardiac Compression) हृदय को पुन: संचालित करने का प्रयास किया जा सकता है। जबकि दूसरी स्थिति (ख) में ऑटेमेटिक एक्सटर्नल डिफाईब्रिलेटर (Automatic External Defibrillator-AED) का उपयोग करके हृदय की गति बढ़ाकर उसे नियंत्रित किया जा सकता है। यह उपकरण स्वयं ही यह बताता है कि हृदय को कब शॉक (Shock) देना है या कब नहीं देना है। इसे प्रयोग करना बहुत ही सरल होता है। इसमें दो स्टीकिंगपैड (Sticking Pads/Electrodes) होते हैं जिन्हें रोगी की छाती पर लगाया जाता है। उसके बाद एईडी (AED) को ऑन किया जाता है। ऑन होने पर इसमें से स्वचालित दिशा- निर्देश आरंभ हो जाते हैं। फिर पूरे बीएलएस की प्रक्रिया के दौरान यह मशीन निर्देश देती रहती है। यदि AED उपलब्ध न हो तो छाती के बीचों बीच सपाट हड्डी (Sternum) पर मुक्का मारकर (Pre-Cordial Thump) भी AED जैसा काम लिया जा सकता है। ऐसे में दाहिने हाथ की मुट्ठी बनाकर हाथ को छाती के 20 सेंटी मीटर ऊपर रखकर छाती के बीच की सपाट हड्डी (Sternum) के निचले भाग पर दबाएँ।

ध्यान दें कि बीएलएस इन चार चरणों में से प्रथम तीन चरणों को सी ए बी के क्रम में किया जाता है:-

सी (C): कार्डिअक (Cardiac Compression) – छाती पर दबाव डालना
ए (A): एयरवे (Airway): एयरवे को साफ करना, खोलना व नियंत्रित करना
बी (B): ब्रीथिंग (Breathing): कृत्रिम श्वास देना

याद रहे कि यदि इस दौरान AED उपलब्ध हो जाए तो इसका तुरंत उपयोग करना ही श्रेयस्कर होगा। बीएलएस की प्रक्रिया को तब तक जारी रखना चाहिए जब तक कि:-

क) रोगी को अस्पताल तक ना पहुंचा दिया जाए; या
ख) उसके हृदय की धड़कन वापस ना आ जाए; या
ग) अन्य सहायता उपलब्ध ना हो जाए।

बीएलएस कब, कहाँ और किनके लिए करें:

**कब**: बीएलएस निम्न परिस्थितियों में किया जाता है: किसी व्यक्ति की सड़क दुर्घटना होने, डूब जाने, विद्युत का झटका लगने, श्वास मार्ग में अवरोध होने, हार्टअटैक इत्यादि।

**कहाँ:** अस्पताल से बाहर सी. पी. आर. के अंतर्गत केवल प्रारंभिक जीवन सहायता ही प्रदान की जा सकती है। अस्पताल के अन्दर उन्नत जीवन सहायता प्रदान की जा सकती है क्योंकि वहां पर उपकरण, डॉक्टर, नर्स आदि की सहायता भी उपलब्ध होती है।

**किन के लिए:** वयस्क:- 8 वर्ष से अधिक; बालक:- 1 से 8 वर्ष; शिशु:- 0 से 1 वर्ष; सी.पी. आर. के लिए 8 वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्ति को वयस्क ही मानकर चलते हैं।

इन सभी में बीएलएस के विभिन्न चरण एक समान ही रहते हैं लेकिन छाती पर दबाब डालने की दर, बल और कृत्रिम श्वास देने की दर तीनों स्थितियों में अलग-अलग होती है।

## अब चलिए जानते हैं, बीएलएस करने की प्रक्रिया के चरण

* **पहला चरण:** यह देखें कि आप स्वयं और प्रभावित व्यक्ति सुरक्षित हैं, (सीन सुरक्षा - Scene Safety) उदाहरण के लिए यदि दुर्घटना सड़क पर हुई है, तो व्यक्ति को पहले सड़क के किनारे में सुरक्षित स्थान पर ले जा कर ही बीएलएस की प्रक्रिया आरंभ करनी चाहिए। अर्थात बीएलएस के लिए दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति और आपके लिए सुरक्षित स्थान का होना अनिवार्य है।
* **दूसरा चरण:** प्रभावित व्यक्ति को जोर से आवाज देकर बुलाएँ। जैसे कि हाँ भई ठीक हो (उनकी प्रतिक्रिया की जाँच करें)। याद रहे, यह प्रक्रिया रोगी के सामने की ओर से ही करनी चाहिए। पीछे से नहीं। पीछे से करने से हो सकता है रोगी एकदम गर्दन घुमाकर जवाब देने की कोशिश करें जिससे उसकी गर्दन की हड्डी में लगी चोट अधिक गंभीर हो सकती है।
* **तीसरा चरण:** अब आप एमरजेंसी मेडिकल सिस्टम (ईएमएस) को सूचित करें।

  ईएमएस को सूचित करने के लिए भारत में 102, हैदराबाद में 108 या फिर स्थानीय निकटवर्ती अस्पताल के ईएमएस नंबर पर डायल करें।

  ध्यान दें कि बच्चों में पहले बीएलएस की प्रक्रिया आरंभ करें और उसके बाद ई एम एस को सूचित करें।
* **चौथा चरण:** यदि बेहोश व्यक्ति से कोई प्रतिक्रिया न मिले तब निम्नानुसार कार्य आरंभ करना चाहिए :-

  1. व्यक्ति को एक समतल एवं सख्त धरातल पर लिटा दें।
  2. रोगी को लिटाते समय अन्य गंभीर चोटों को ध्यान में रखकर ही आगे बढ़ें।
  3. इसके तुरंत बाद यह सुनिश्चित करें कि व्यक्ति साँस ले रहा है या नहीं और साथ ही साथ ग्रीवा धमनी (Carotid Artery) में धड़कन केवल 8-10 सेकंड के लिए महसूस करें। बच्चों की ब्रेकिअल धमनी (Brachial Artery) में धड़कन महसूस करें। यदि यह महसूस ना हो और रोगी साँस न ले रहा हो या रुक-रुक कर साँस ले रहा हो तो बीएलएस की प्रक्रिया आरंभ करें।

## ग्रीवा धमनी को महसूस करने के लिए:

1. रोगी के सिर को पीछे की ओर झुकाएं।
2. एक हाथ की पहली और दूसरी अंगुली को गर्दन के बीचोंबीच के अस्थि उभार (Adams Apple) पर रखें।

3. अंगुलियों को पीछे की ओर धीरे-धीरे हल्का दबाव डालते हुए ले जाएं और धड़कन को अंगुलियों की समतल सतह से महसूस करने की कोशिश करें।
4. यदि हमारी विधि ठीक है तो ग्रीवा धमनी की धड़कन अस्थि उभार और मांसपेशियों के बीच में महसूस होगी।
5. ग्रीवा धमनी की धड़कन महसूस करते समय इतना न दबाएँ कि रक्त संचालन ही रुक जाये।

## छाती पर दबाव कैसे डाले?

यह सुनिश्चित करें कि रोगी एक समतल और सख्त जगह पर लेटा हो।

## छाती पर दबाव डालने की विधि:

अब आप रोगी के एक तरफ जाएं और घुटनों के बल बैठकर (यदि रोगी जमीन पर लेटा हो तो) उसकी छाती के बीच की सपाट हड्डी (Sternum) के निचले आधे भाग पर अपने बांए हाथ की हथेली रखें और इसके ऊपर दूसरे हाथ की हथेली रखें। दोनों हथेलियों से पूरे शरीर का भार डालते हुए और कोहनियों को सीधा रखते हुए छाती को पीछे की ओर दबाएं।

यह क्रिया 30 : 2 के अनुपात में **बीएलएस** करें (30 बार छाती के बीचोबीच दबाएँ और '2' बार कृत्रिम शवास दें, फिर '30'बार दबाव दे, फिर '2' सांस दे)। इस प्रक्रिया को चिकित्सा सहायता मिलने तक दोहराते रहें।

## ध्यान रहे:

1. आपके दोनों बाजू सीधे रहें, कोहनियों से मुड़े नहीं होने चाहिए। आपके कंधे हाथों की सीध में रहें।
2. आपकी अंगुलियां ऊपर की ओर खुली रहें ताकि पसलियों पर अधिक दबाव न पड़े। पसलियां टूट सकती हैं।
3. प्रत्येक दबाव के बाद छाती के पुन: सामान्य स्थिति में आने के बाद ही अगला दबाव दें।
4. छाती को ऊपर से नीचे की ओर दबाएं और तेज गति से दवाएं।
5. आवश्यकता से कम दबाव देने से रक्त संचालन सुचारु रूप से नहीं होगा,मस्तिष्क तक रक्त नहीं पहुँच पाएगा।
6. अत्यधिक दबाव से छाती अंदर धँस सकती है।
7. बहुत ऊपर की ओर दबाव डालने से छाती के बीचोंबीच की हड्डी (sternum) टूट सकती है।
8. बहुत नीचे दबाने पर पेट से द्रव्य बाहर आ सकता है। इसलिए छाती पर दबाव की प्रक्रिया सावधानी पूर्वक करनी चाहिए।
   - वयस्क में छाती को 5-6 से.मी. तक दबाएं
   - बच्चों में छाती को 2.5-4 से. मी. तक दवाएं
   - शिशुओं में छाती को 1-2 से. मी. तक दबाएं
9. बड़ें बच्चों में अपने एक हाथ की हथेली का ही उपयोग करें। इसे छाती और सिर ऊपर बताए अनुसार रखें।

## श्वास मार्ग नियंत्रण:

1. श्वास दान देने से पहले श्वास मार्ग को साफ करें। व्यक्ति के मुख में कोई भी विजातीय द्रव्य या पदार्थ जैसे कि उल्टी, खून या कोई बड़ा कण हो तो उसे तुरंत साफ करने की कोशिश करें। इसके लिए 2 अँगुलियों पर रुमाल लगाकर उसे रोगी के मुख में से घुमाकर निकालें। आवश्यक पड़ने पर इस प्रक्रिया को दुबारा करें।
2. एक हाथ द्वारा सिर-मस्तक पीछे की ओर दबाएँ और दूसरे हाथ से रोगी के निचले जबड़े को ऊपर उठाएँ और रोगी के मुख को खुला रखते हुए (ट्रिपल एयर वेमैनोवर - Triple Airway Manoeuvre) रोगी के मुख में दो श्वास दें। श्वास देते समय रोगी की छाती का उतार -चढ़ाव देखें। यदि उतार-चढ़ाव प्रतीत न हो तो सिर को फिर से पीछे दबाएँ और निचले जबड़े को फिर से ऊपर उठाएं। इस प्रक्रिया द्वारा श्वास मार्ग को खोला जाता है ताकि कृत्रिम श्वास दिया जा सके।

## याद रहें:

यदि श्वास मार्ग खुला है तभी कृत्रिम श्वास देना लाभप्रद है, अन्यथा नहीं।

## ट्रिपल एयरवे मैनोवर - Triple Airway Manoeuvre

क) अब आप एक लम्बी श्वास लेकर रोगी के खुले मुख को अपने मुख से ढककर अपनी श्वास को रोगी के मुख में छोड़े, शिशु अथवा छोटे वयस्क के रोगी का मुख व नाक दोनों ढकने चाहिए (मुख से मुख व नाक में श्वास देना)।

ख) श्वास देने समय रोगी की छाती के उतार-चढ़ाव को देखते रहें। यदि उतार-चढ़ाव नहीं हैं तो सिर और गर्दन की स्थिति को पुन: ठीक करें।

**श्वास देने की दर :** (यदि केवल श्वास ही देने की आवश्यकता हो)

* वयस्क में : 10-12 प्रति मिनट
* बच्चों और शिशुओं में : 10-20 प्रति मिनट
* नवजात शिशुओं में : 30 प्रति मिनट

## याद रहे:

1. श्वास देते समय रोगी की नाक व नथुने अवश्य बंद करें या फिर श्वास देते समय अपने गालों से रोगी के नाक को बंद करें ताकि हवा नाक से बाहर न निकल सके।
2. मुख से नाक में श्वास देते समय रोगी का मुख बंद रखें।

## कृत्रिम श्वास एवं छाती पर दबाव का समन्वय:

यदि एक व्यक्ति बीएलएस दे रहा है तो 30 बार छाती पर दबाव देने के बाद 2 श्वास रोगी के मुख में दें। इस प्रक्रिया को तब तक दोहराते रहें जब तक :

* अन्य सहायता उपलब्ध न हो जाए।
* रोगी के दिल की धड़कन वापस न आ जाए।
* रोगी को अस्पताल न पहुंचा दिया जाए।

दबाव : श्वास का अनुपात = 30 : 2

छाती पर दबाव की दर =100 - 120 प्रति मिनट होनी चाहिए।

यदि दो व्यक्ति बीएलएस दे रहें है तो पहला व्यक्ति शीघ्रता से छाती पर 30 दबाव डाले और सहायक व्यक्ति शीघ्रता से दो बार मुख में श्वास दे। इस क्रम को जारी रखें। दबाव व श्वास देने की प्रक्रिया 5 बार पूरी होने पर पहला व्यक्ति साँस देने का काम करें और दूसरा व्यक्ति हृदय पर दबाव दे। बच्चों में कोई सहायक उपलब्ध न होने पर इसी अनुपात में अर्थात 30:2 के अनुपात में बीएलएस करें और यदि सहायता उपलब्ध हो तो 15:2 के अनुपात में बीएलएस करें।

## याद रहे:

छाती पर दबाव डालना थकाने वाला कार्य है। इसलिए दो व्यक्ति होने पर हर 2 मिनट में अपना-अपना कार्य बदलते रहें और तब तक बीएलएस की प्रक्रिया जारी रखें जब तक कि रोगी को अस्पताल न पहुंचा दिया जाए।

### आवश्यकता पड़ने पर AED (यदि उपलब्ध हो) का प्रयोग अवश्य करें।

सांस का ठीक प्रकार से चलते रहना सामान्य रक्त संचलन का द्योतक है। यदि रोगी सांस भी ले रहा है और उसका हृदय भी चल रहा है लेकिन वह बेहोश है तो ऐसे में उसे चित्र में दिखाए गए अनुसार रिकवरी पोजीशन (Recovery Position) में लिटाएँ (चित्र देखिए)। लिटाने के बाद रोगी को अस्पताल पहुँचाने तक रोगी की नाड़ी (Pulse) और सांस चलने की लगातार जाँच करते रहें।

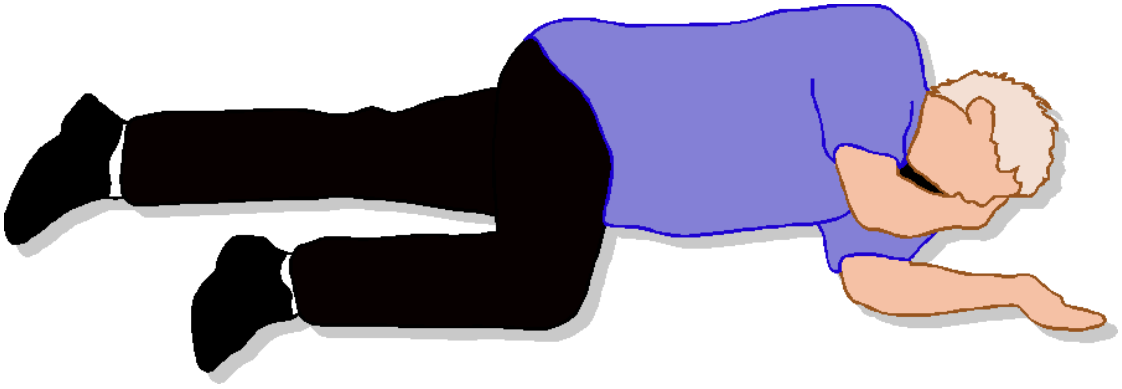

*रिकवरी पोजीशन* (Recovery Position)

### बीएलएस (BLS) की कठिनाइयाँ एवं जटिलताएं (Complications):

बीएलएस में पूर्ण रूप से सही विधि का अनुसरण करने पर भी कई जटिलताएं हो सकती हैं। जैसे कि:-

1. पसलियों का टूटना।
2. उरास्थि (Sternum) या छाती की सपाट हड्डी को क्षति पहुँचना।
3. पसलियों का उरास्थि से अलग होना।
4. श्वास दान के समय हवा के अधिक दबाव से फेफड़े फट सकते हैं (विशेषत: बच्चों में)
5. श्वास दान के समय हवा के अधिक दबाव के कारण पेट से द्रव्य बाहर आकर फेफड़ों में जा सकता है और रोगी को निमोनिया (Pneumonia) हो सकता हैं।

इन सभी जटिलताओं की संभावना होने के उपरान्त भी बीएलएस से मिलने वाला लाभ अर्थात जीवनदान कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। यह जीवनदान की अद्भुत तकनीक है।

## संदर्भ:


1) https://www.northwestcareercollege.edu/blog/what-are-the-7-steps-of-cpr-in-order/#:~:text=The%20seven%20steps%20of%20CPR,until%20Advanced%20Medical%20help%20arrives.

2) https://www.skillstg.co.uk/blog/adult-basic-life-support/

3) https://www.esic.nic.in/attachments/publicationfile/0015691f4dd6112316a0b8f7084df136.pdf

# मोटापा और उसका योगिक प्रबंधन

अनुप कुमार मंडल
अ.म.प्र.
(डाऊन स्ट्रीम अनुरक्षण)

## मोटापा क्या है?

मोटापा एक जटिल विकार है जो शरीर में अत्यधिक वसा के कारण होता है। सामान्य तौर पर हमारे शरीर को स्वस्थ रखने के लिए जितना वजन होना चाहिए उससे अधिक वजन होने पर मोटापा कहा जाता है। इसे अंग्रेजी में ओबिसिटी कहते हैं।

### मोटापे का निदान (डायग्नोसिस) कैसे किया जाता है?

* मोटापे का निदान करने के लिए किसी व्यक्ति के बॉडी मास इंडेक्स (बीएमआई) की गणना की जाती है।
* बीएमआई की गणना किसी व्यक्ति के शरीर के वजन को किलोग्राम (किलो) में व्यक्ति की ऊंचाई (मीटर में) के वर्ग से विभाजित करके की जाती है।

उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति का वजन 85 किलोग्राम और ऊंचाई 1.65 मीटर है, तो व्यक्ति का बीएमआई है: बीएमआई = 85/ (1.65X1.65) = 31.2 जो मोटापा (वर्ग I) के अंतर्गत आता है, जैसा कि हम निम्नलिखित तालिका में देख सकते हैं।

| बीएमआई | वजन की स्थिति |
|---|---|
| 18.5 से कम | कम वजन वाला |
| 18.5 – 24.9 | सामान्य |
| 25.0 – 29.9 | अधिक वजन |
| 30.0 – 34.9 | मोटापा (वर्ग I) |
| 35.0 – 39.9 | मोटापा (वर्ग II) |
| 40.0 और अधिक | मोटापा (वर्ग III) – अत्यधिक मोटापा |

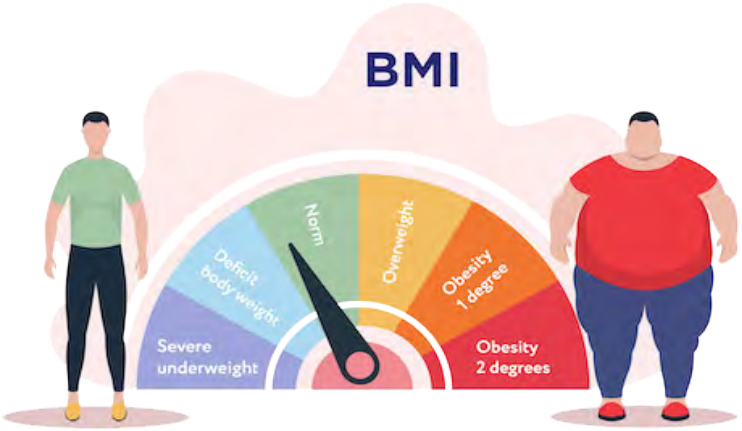


अधिकांश लोगों के लिए बीएमआई शरीर में वसा का एक उचित अनुमान है। लेकिन कुछ लोगों के लिए, जैसे मांसल शरीर वाले एथलीटों का बीएमआई मोटापे की श्रेणी में हो सकता है, भले ही उनके शरीर में अतिरिक्त वसा न हो।

### मोटापे का कारण क्या है?

मोटापा तब होता है जब हम व्यायाम और सामान्य दैनिक गतिविधियों से खर्च होने वाली कैलोरी से अधिक कैलोरी ग्रहण करते हैं। हमारा शरीर इन अतिरिक्त कैलोरी को वसा के रूप में संग्रहीत करता है। इसके अलावा, हमारे शरीर के वजन पर आनुवंशिक और हार्मोनल प्रभाव भी पड़ते हैं।

आमतौर पर मोटापा कई कारणों से होता है। कभी किसी एक कारण से तो कभी उन कारणों के संयोजन से होता है। मुख्य कारण नीचे दिए गए हैं:

* निष्क्रियता और गतिहीन जीवन शैली
* अस्वास्थ्यकर आहार और खान-पान की आदतें
* गर्भावस्था
* नींद की कमी
* कुछ दवाइयाँ : जैसे एंटीडिप्रेसेंट, एंटीसेज़्योर, मधुमेह, एंटीसाइकोटिक और कॉर्टिकोस्टेरॉइड्स और बीटाब्लॉकर्स आदि।
* आनुवंशिकी

## मोटापे का योगिक प्रबंधन

योगासनों के नियमित अभ्यास से मोटापे से छुटकारा पाया जा सकता है। यहाँ उन आसनों की जानकारी दी जा रही है। आप इसे स्वयं या किसी प्रशिक्षक की देख-रेख में इन आसनों का अभ्यास कर सकते हैं। इनमें कुछ आसन काफी सरल हैं और कुछ अधिक अभ्यास से सीखे जा सकते हैं।

**सूर्य नमस्कार: यदि आप सूर्य नमस्कार नियमित रूप से करेंगे तो मोटापा कम हो सकता है। सूर्य नमस्कार 12 आसनों** का संयोजन है। इसके आप 16 राउंड करें, नियमित रूप से करें। आप पाएँगे कुछ दिनों या महीनों के बाद आपका मोटापा कम हो रहा है। इसके अलावा नीचे दिए गए आसन, क्रियाएँ और प्राणायाम, बताए गए अनुसार करें, अवश्य लाभ होगा:

**आसन:**

* पादहस्तासन : 1 मिनट
* हलासन : 1 मिनट
* धनुरासन : 1 मिनट
* सेतुबंधासन : 1 मिनट
* नौकासन : 1 मिनट
* उष्ट्रासन : 2 मिनट
* अर्धमत्स्येन्द्रासन : प्रत्येक तरफ 1 मिनट
* पश्चिमोत्तासन : 1 मिनट
* चक्रासन : 1 मिनट
* त्रिकोणासन : प्रत्येक तरफ 1 मिनट

**कघा:**

* अग्निसार : 3 से 4 राउंड में कुल 100 स्ट्रोक
* उड्डियान बंध : 3 राउंड (प्रत्येक राउंड 30 सेकंड)
* कपालभाति : 3 राउंड (प्रत्येक राउंड 120 स्ट्रोक)

**प्राणायाम:**

* भस्त्रिका प्राणायाम : 10 मिनट
* सूर्यभेदी प्राणायाम : 10 मिनट (कुंभक के साथ अभ्यास करने पर अधिक प्रभावी)

**उपरोक्त कुछ आसनों की तस्वीरें**

पादहस्तासन

हलासन

धनुरासन

सेतुबंधासन

नौकासन

## निष्कर्ष:

योगाभ्यास करने के इच्छुक व्यक्तियों से निवेदन है कि योगाभ्यास नियमित करें। इसे बीच में ही छोड़े नहीं। आयुष मंत्रालय द्वारा योग संबंधी प्रसारित वीडियो देखकर, मिधानि के अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के वीडियो में देखकर या इस लेख के लेखक द्वारा चलाए जा रही ऑनलाइन योग कक्षाओं में शामिल होकर आप योग का अभ्यास कर सकते हैं। कक्षाएं निःशुल्क जूम पर चलाई जाती हैं। संपर्क के लिए मोबाइल नं. 8978885177 है। आपकी सहायता के लिए यहाँ योग के कुछ वीडियो के लिंक दिए जा रहे हैं:

https://www.youtube.com/watch?v=JhM7mrRZbII
https://www.youtube.com/watch?v=_ltXnuVix04
https://www.youtube.com/watch?v=QyoE2MI2qrs
https://www.youtube.com/watch?v=_2GgRQJ9IbU

# श्री रामायण के परिप्रेक्ष्य में भ्रष्टाचार मुक्त समाज की परिकल्पना

श्री रामायण एक महान ग्रंथ है। यह आदर्शों की खान है, जहाँ आप पाएँगे एक आदर्श जोड़ी – सीताराम, आदर्श भाई – राम-लक्ष्मण, आदर्श विश्वासपात्र – हनुमान, आदर्श शासन – रामराज्य। व्यक्तिगत व पारिवारिक जीवन से लेकर राज्य के शासन तक, सार्वभौमिक मानवता का आदर्श है श्री रामायण। यह एक मार्गदर्शक भी है।

**डॉ. पी. वीरराजू**
उप महाप्रबंधक
(चिकित्सा सेवाएँ)

सुबह किसी से मिलते ही कहते हैं – जय श्री राम या राम-राम। कुछ अपशब्द सुनते ही मुख से अनायास निकल जाता है'राम-राम-राम-राम'। कठिनाई होती है तो कहते हैं 'हे राम'। यदि आप भूखे हैं, तो आप कहते हैं

'अन्नामो रामचन्द्र'। किसी की मृत्यु हो जाती है तो आप सुनते हैं – राम नाम सत्य है। कोई भविष्य के बारे में पूछे जाने पर कहता है – राम जाने। समाज में ढोंगी लोगों के लिए कहा जाता है – मुंह में राम बगल में छुरी। कहने का अभिप्राय है, श्री राम हमें भारतीय जीवन शैली में रचे बसे दिखाई देते हैं। जोड़ी में – वाणी में – दयालुता में – कठिनाई में – सुख में। हर जगह राम हैं। सारा वातावरण राममय है।

शायद समय के साथ-साथ केवल राम की ध्वनि व शब्द ही हमारे बीच रह गए हैं। ऐसा लगता है कि यह देश श्री राम के आदर्शों को भूलने लगा है। आप चाहे तो इसके प्रमाण हमारे समचार पत्रों में पढ़ सकते हैं। टीवी चैनलों पर सुन सकते हैं। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल के भ्रष्टाचार सूचकांक 2022 के अनुसार भारत भ्रष्टाचार की रैंकिंग में 85 वें स्थान पर है। ईमानदारी से कहूं तो हमें सौ में से केवल 40 अंक मिले। इस भूमि पर जहां धर्ममूर्ति श्री राम चले थे, इस भूमि पर जहां राम का राज्य फला-फूला, सभी सनातनी आज की भ्रष्ट परिस्थितियों से जूझ रहे हैं।

भ्रष्टाचार मुक्त समाज के निर्माण के लिए, भ्रष्टाचार मुक्त नागरिक बनने के लिए, श्री रामायण में किस प्रकार की सतर्कता की आवश्यकता पर जोर दिया गया है, आइए जानने की कोशिश करते हैं। यहाँ जगह-समय को ध्यान में रखते हुए श्री रामायण के केवल कुछ ही संदर्भों पर चर्चा की जा रही है। कहा भी जाता है – हरि अनंत, हरि कथा अनंता। श्री रामचरित मानस की चौपाई है –

हरि अनंत हरि कथा अनंता। कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता।।
रामचंद्र के चरित सुहाए। कलप कोटि लगि जाहिं न गाए।।

**भावार्थ:**

हरि अनंत हैं। उनका कोई पार नहीं पा सकता। उनकी कथा भी अनंत है। सब संत लोग उसे बहुत प्रकार से कहते-सुनते हैं। रामचंद्र के सुंदर चरित्र करोड़ों कल्पों में भी गाए नहीं जा सकते हैं।

श्री रामायण अयोध्याकांड के 10वें सर्ग में - भगवान राम को वापस अयोध्या बुलाने के लिए भरत वन में भगवान राम के पास जाते हैं। उस अवसर पर कुशल प्रश्नों के रूप में - श्री राम ने भरत को राजसी गुणों की शिक्षा दी।

राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न चारों ने एक ही गुरु से, एक ही समय में बुद्धि-विद्या, शास्त्र और धर्म की सूक्ष्मताएँ सीखीं। ऐसे में श्री राम और भरत को ये गुण बताने की जरूरत नहीं है। यह घटना भ्रष्टाचार से मुक्त एक स्थिर साम्राज्य की स्थापना के लिए आवश्यक दिशानिर्देश प्रदान करने के उद्देश्य से घटित हुई।भ्रष्टाचार का मूल अर्थ है - रिश्वत लेना, अवैध रूप से धन कमाना।

ईश्वर कहाँ है इस प्रश्न के उत्तर में-

पोतना भागवतम में कहते हैं-

इंदुगलदंदु लेड़नी
(ఇందుగలడందు లేడని)
संदेहमु वलदु चक्रि सर्वोपगतुं
(సందేహము వలదు చక్రి సర్వోపగతుం)
डेंदेंदु वेदकि जुचिन (డెందెందు వెదకి జూచిన)
नंदंदे गलडु (నందందే గలడు)

यहाँ-वहाँ, जहाँ तहाँ
मत पूछो, कहाँ-कहाँ
है चक्रधर
संदेह न कर
खोज करोगे जहाँ-जहाँ
उसे पाओगे वहाँ-वहाँ

हममें से अधिकांश लोगों के पास हर जगह ईश्वर को देखने की न तो सूक्ष्म दृष्टि है न शक्ति है; लेकिन हम हर जगह विभिन्न रूपों में भ्रष्टाचार देख पाते हैं।भ्रष्टाचार क्या है? दो टूक शब्दों में कहे तो,जो किया जाना चाहिए उसे कर सकने के बावजूद नहीं करना - भ्रष्टाचार है। सीधे शब्दों में कहें तो - सभी नौकर चोर, भ्रष्ट हैं। व्यक्ति के स्तर पर - हर कोई जो काम करने में सक्षम है,लेकिन अपने कर्तव्यों का पालन ठीक से नहीं करता है, वह भ्रष्ट है। भ्रष्टाचार का दूसरा रूप उन लोगों को रिश्वत देना है जो काम नहीं करते।

राम भरत से कहते हैं -

इक्ष्वाकुनाम उपाध्यायो यथावत् तात पूज्यते ।। 2-100-9

सुधन्वानम् उपाध्यायम् कच्चित् त्वम् तत् मन्यसे ।। 2-100-14

भाई भरत, वसिष्ठ महर्षि, जो इक्ष्वाकु वंशजों के गुरु हैं, हमेशा की तरह गौरव प्राप्त कर रहे हैं न? क्या शस्त्र-अस्त्र विशेषज्ञ सुधन्व नामक आचार्य का सम्मान कर रहे हो न? हमारा दायित्व है गुरुओं की सेवा करना, प्रतिभावान व्यक्तियों का सम्मान करना। इस परंपरा को तुम आगे बढ़ाओ।

अपात्रेषु न ते कच्चित् कोशो गच्छति राघव ।। 2-100-54

हे मेरे अनुज, भरत, धन का इस्तेमाल अज्ञानियों के लिए तो नहीं कर रहे हो न? अज्ञानियों को अपने राजकाज का हिस्सा मत बनाओ। इनके लिए अपना धन-समय व्यर्थ नहीं करना चाहिए। ज्ञानियों की संगति में रहो। राजकाज में उनसे सलाह लेते रहो।

संगठनात्मक मामलों व तकनीकी मामलों में विशेषज्ञता रखने वालों और देश, समाज या संगठनों के हित में काम करने वालों को उचित सम्मान दिया जाना चाहिए। जो समाज या संगठन शिक्षित लोगों का सम्मान नहीं करता, उसके हितों को नुकसान पहुंचता है। सुपात्र का अनादर करना, अपात्र को सुशोभित करना एक प्रकार का भ्रष्टाचार है।

कच्चित् ते मन्त्रितो मन्त्रो राष्ट्रम् न परिधावति ।। 2-100-18
कच्चिन् न तार्कैर युक्त्वा वा ये च अप्य अपरिकीर्तिताः।
त्वया वा तव अमात्यैर बुध्यते तात मन्त्रितम् ।। 2-100-21

प्रिय भरत, आप जो गुप्त कार्य करना चाहते हैं, वे प्रकट तो नहीं हो रहे हैं? जिन कार्यों को निश्चित किया गया उनके संबंध में घोषणा से पहले ही किसी को पता तो नहीं चल रहा है न? घोषणा से पहले ही लोगों को पता चलता है तो असामाजिक तत्व सद्कार्य में विघ्न डालते हैं। गोपनीय कार्य सार्वजनिक होने से राजकाज के कार्य बाधित होते हैं। यह भी एक प्रकार का भ्रष्टाचार ही है।

कच्चित् स्त्रियः सान्त्वयसि कच्चित् ताः च सुरक्षिताः।
कच्चिन् न श्रद्दधास्य आसाम् कच्चिद् गुह्यम् न भाषसे ।। 2-100-49

हे भरत! क्या आप अपने रानीवास की महिलाओं को खुश रखते हैं? क्या आप उन पर पूरा भरोसा करते हैं? उन्हें रहस्य नहीं बता रहे हैं न?अपनी पत्नी को खुश रखना पुरुष का कर्तव्य है। लेकिन श्री रामायणम् हमें बताता है कि पत्नी को भी अपने कार्य से जुड़ी गुप्त बातें नहीं बतानी चाहिए। हमारी संस्कृति कर्तव्य के प्रति ईमानदार प्रतिबद्धता की खान है।राज्य के प्रमुख या किसी संस्था के प्रमुख के स्तर पर, प्रशासनिक परिषद के स्तर पर, विभाग प्रमुख के स्तर पर - उनके निर्णय और विचार दूसरों को आधिकारिक तौर पर घोषित होने से पहले ज्ञात नहीं होने चाहिए। जो लोग ऐसी जानकारी दूसरों तक पहुंचाते हैं, जो ऐसी जानकारी जानना चाहते हैं, जो सहयोग करते हैं - वे सभी भ्रष्ट हैं!

अमात्यान् उपधा अतीतान् पितृ पैतामहान् शुचीन् ।
श्रेष्ठान् श्रेष्ठेषु कच्चित् त्वम् नियोजयसि कर्मसु ।। 2-100-26

केवल उन लोगों का उपयोग महत्वपूर्ण कार्यों के लिए किया जाना चाहिए जो प्रलोभन में नहीं आते और जो भ्रष्ट नहीं हैं। हे भरत, आपको चाहिए कि आप ऐसे व्यक्तियों को अपने राज्य के कामों में लगाओ जो सत्यनिष्ठ हों। लालच के वश में आकर कोई अनैतिक कार्य नहीं करते हों। राज्य की सुरक्षा-समृद्धि के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि राजकाज से जुड़ें सभी व्यक्ति राज्य के हित में काम करें। व्यक्तिगत हितों को वरीयता न दें। उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति राज्य अपना दायित्व समझे।

उपाय कुशलम् वैद्यम् भृत्य संदूषणे रतम् ।
शूरम् ऐश्वर्य कामम् च यो न हन्ति स वध्यते ।। 2-100-29

भ्रष्ट लोगों को महत्वपूर्ण पदों से दूर रखा जाना चाहिए। अन्यथा ऐसे कर्मचारी राज्य का अहित करने से झिझकते नहीं हैं। भ्रष्ट व्यक्ति स्वयं के हित की सोचता है, सत्यनिष्ठ व्यक्ति हमेशा राज्य व देश के हित में सोचता है।

कोई भी संगठन हो, भ्रष्ट लोगों की वजह से संगठन के प्रमुख को नुकसान पहुंचता है। किसी भी संगठन में तो महत्वपूर्ण – प्रमुख – वित्तीय लेनदेन से जुड़ी जिम्मेदारियाँ – केवल सतर्कता मंजूरी वाले कर्मचारियों को दी जानी चाहिए।

यानि मिथ्या अभिशस्तानाम् पतन्त्य् अस्राणि राघव ।
तानि पुत्र पशून् घ्नन्ति प्रीत्य् अर्थम् अनुशासतः ।। 2-100-59

सत्ता का दुरुपयोग भ्रष्टाचार का दूसरा रूप है।जिनके पास शक्ति है, उनके लिए विवेकवान होने की अत्यंत आवश्यकता है, संयम की आवश्यकता है, धैर्य की आवश्यकता है। इसके अलावा, यदि वह सोचता है कि उसके पास तो अधिकार है और फिर वह निर्दोष लोगों को कष्ट पहुँचाने लगता है तो, चोट पहुंचाने लगता है तो, बिना किसी कारण दंड देने लगता है तो, श्री रामायण सावधान करता है कि पीड़ित कर्मचारियों का असंतोष व्यवस्था को अस्थिर कर देगा और संगठनात्मक लक्ष्यों के रास्ते में रोड़ा बनेगा!

श्री रामायण बहुत प्राचीन है। आधुनिक इतिहासकारों के अनुसार यह कम से कम पांच से सात हजार वर्ष पुराना है।उन दिनों की श्री रामवाणी – आज भी अक्षत सत्य के रूप में विद्यमान है। यह हमारे पूर्वजों की सोच और भ्रष्टाचार मुक्त समाज की स्थापना के उनके दृष्टिकोण को दर्शाता है। आपको चाहे पारंपरिक संस्कृति के प्रति प्रेम हो, चाहे देश के प्रति भक्ति हो, चाहे हम स्वयं को भगवान राम का उत्तराधिकारी मानते हों, हमें भ्रष्टाचार मुक्त समाज की स्थापना में अपना योगदान देना चाहिए!

# रोहित निगुडकर की लघुकथाएँ

**रोहित निगुडकर**
उप महाप्रबंधक
(वित्त एवं लेखा)

## संस्करण

सुनो आज छुट्टी ले लो न, प्लिज़। अलका ने शहद डूबी आवाज़ में सुभाष से कहा।
अरे डियर आज बहुत जरूरी मीटिंग है। सुभाष ने असमर्थता जताते हुए कहा।
बोल देना पत्नी की तबियत ठीक नही है इसलिए नही आ पाऊंगा। अलका ने उपाय सुझाया।
ऐसा थोड़ी न होता है यार। सुभाष हँसते हुए बोला।
ऑफिस के चक्कर में क्या लोग घर वालों को मरता छोड़ के जाएंगे? अलका तुनक कर बोली।
अलका पैर पटकती हुई बाहर चली गई।
सुभाष तैयार होकर नाश्ता करने टेबल पर आया तो देखा अलका फोन पर बात कर रही है।
किसका फोन था? सुभाष ने पूछा।
बाई का बेटा बीमार है तो नही आएगी। इन लोगों को तो छुट्टी का बहाना चाहिए।
अरे थोड़ा काम कर के चली जाती। कभी खुद बीमार कभी बेटा बीमार। यही चलता रहता है।
घर पर कोई बीमार है तो क्या घर के काम छोड़ देगी।
लेकिन मेरा काम करने के लिए बहाने बना रही है।
अलका गुस्से मे बड़ बड़ा रही थी।
सुभाष चुप था। वह अलका के दोनों संस्करणों को भौंचक् सा देख रहा था।

### एचएएल और मिधानि की बैठक

*मिधानि के सीएमडी डॉ. एस.के. झा ने एचएएल के सीएमडी श्री सी.बी. अनंतकृष्णन, निदेशक (वित्त) और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक की। उनके बीच 04.08.2023 को तेजस और हेलीकॉप्टर कार्यक्रमों की चल रही परियोजनाओं के लिए सामग्रियों के स्वदेशीकरण में एक रोडमैप तैयार करने पर सार्थक चर्चा हुई।*

# वेलेंटाइन डे

साहब! मैडम के लिए यह गिफ्ट ले लीजिये न। छुटकी ने कहते हुए प्यारा सा टैडी आगे बढ़ा दिया।
कार वाले लड़के ने अपने साथ बैठी लड़की को मुस्कुरा कर देखा, वह लजा गई।
यह ले। लड़के ने पैसे देकर टैडी ले लिया।
भला हो इस वैलेंटाइन का बस दो ही टैडी बचे हैं। छुटकी मन ही मन खुश हो रही थी।
तभी एक और कार रुकी। छुटकी दौड़ कर उसके पास पहुंची, मगर उसके पहले ही राजू वहाँ गुलाब ले कर पहुँच गया।
साहब मैडम के बालों में गुलाब अच्छा लगेगा कहकर राजू ने गुलाब आगे बढ़ाया।
साहब मैडम को टैडी दीजिये। कह कर छुटकी ने भी टैडी आगे कर दिया।
साहब टैडी तो आउट ऑफ फैशन हो गया है। कह कर राजू ने अपने गुलाब का विज्ञापन किया।
साहब गुलाब तो मुरझा जाएगा पर टैडी हमेशा मैडम के साथ रहेगा।कह कर छुटकी ने टैडी के दीर्घ जीवन का परिचय दिया।
दोनों को लड़ता देख कार वाले ने बिना कुछ लिए कार आगे बढ़ा दी।
तूने सारा खेल बिगाड़ दिया, अपना अड्डा छोड़ कर इधर क्यूँ आया? छुटकी ने गुस्से में तमतमाते हुए कहा।
क्यूँ? यह जगह तेरे बाप ने खरीद कर दी है क्या? राजू भी गुस्से में बोला।
बाप इतना सोचता तो यह नौबत ही क्यूँ आती। कहते कहते छुटकी की आँखें डबडबा गई।
अरे इतना भी क्या हुआ, तू तो रोने लगी। राजू ने नरम होते हुए पूछा।
आज लौटके अगर मैने बाप को 5000 रुपये नहीं दिये तो वह मेरी शादी एक बूढ़े से 25000 में कर देगा। छुटकी ने सिसकते हुए कहा।
अरे ! रो मत मैं हूँ न। राजू ने छुटकी के कंधे थपथपाते हुए कहा।
इस हालत का जिम्मेदार तू ही है। छुटकी गुस्से से कांप रही थी।
उस दिन तू अगर बस स्टैंड आ जाता तो मै भी आज इन लोगों जैसी तेरे साथ घूम रही होती। ठीक है गाड़ी नही होती पर कम से कम इज्जत तो होती। छुटकी ने हारे स्वर में कहा।
उस दिन मैं आने वाला था छुटकी पर मैं जिसकी गाड़ी चलाता था उसकी नई गाड़ी में खरोंच आ गई, और उसनें गुस्से में मुझे पुलिस को दे दिया। कुछ देर के लिए राजू रुक कर बोला। 6 महीने के बाद जब जेल से बाहर आया तो तुम लोग खोली में नही थे। बहुत ढूँडा। राजू के स्वर में निराशा थी।
अब मैं क्या करूँ? छुटकी के स्वर में निराशा थी।
देख वो कार आ रही है, तू बेच अपने टैडी। राजू ने कार की तरफ इशारा किया।
छुटकी अपने टैडी बेचने दौड़ पड़ी।
जब वापस आई तो राजू नही था।
इधर उधर देखा तो दूर अंधेरी सी गली मे जाता हुआ राजू उसे दिख गया।
यूँ राजू को अकेले जाता देख छुटकी की आँखे छल छला गईं।
उसने पीछे से आवाज़ लगाते हुए दौड़ लगा दी।
छुटकी की आवाज़ सुन कर राजू रुक गया।
राजू ने देखा छुटकी के हाथ में एक टैडी बचा है।
इसे क्यूँ रख लिया? राजू ने फीकी हंसी हँसते हुए कहा।
छुटकी ने टैडी राजू की तरफ बढ़ाते हुए कहा यह तेरे लिए, चल फिर से शुरुआत करते हैं।
सच छुटकी। राजू ने छुटकी का हाथ कस कर पकड़ लिया।
राजू ने अपना गुलाब छुटकी को दे दिया।
और दोनो एक दूसरे का हाथ पकड़े रोशनी भरी गली की ओर चल पड़े।

# सरदार (1993)

**मनन जेठवानी**
उप प्रबंधक
(कंपनी सचिव)

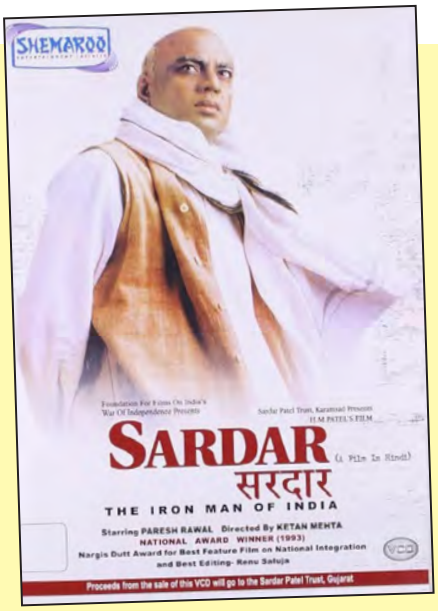


## परिचय:

रॉबर्ट हेनलेन के अनुसार, जो पीढ़ी इतिहास की उपेक्षा करती है उसका न तो कोई अतीत होता है और न ही कोई भविष्य। 'इतिहास की बात करें तो भारत ने आक्रमण, उपनिवेशीकरण, क्रांतियाँ, स्वतंत्रता देखी है। इसलिए इसका इतिहास समृद्ध और क्रूर भी है। 1945-1950 के दौरान एक संक्षिप्त अवधि को कैद करने के लिए केतन मेहता द्वारा निर्देशित 'सरदार' नामक फिल्म बनाई गई, जिसमें परेश रावल ने सरदार वल्लभभाई पटेल की भूमिका निभाई; मोहनदास करमचंद गांधी के रूप में अन्नू कपूर; पंडित जवाहरलाल नेहरू के रूप में बेंजामिन गिलानी; और मोहम्मद अली जिन्ना के रूप में श्रीवल्लभ व्यास फिल्म के प्रमुख पात्र थे। फिल्म भारतीय इतिहास की प्रमुख घटनाओं को दर्शाती है जैसे कि वे घटनाएँ जिनके कारण भारत का विभाजन हुआ, विभाजन के बाद, रियासतों का भारत में एकीकरण, एम.के.गांधी की हत्या। ऐसी प्रमुख घटनाओं को 2 घंटे 55 मिनट की फिल्म में बखूबी शामिल किया गया है। फिल्म गुजरात में पटेल की साधारण शुरुआत से लेकर राष्ट्र की नियति को आकार देने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका तक की उल्लेखनीय यात्रा का सावधानीपूर्वक वर्णन करती है। सम्मोहक कहानी कहने, शक्तिशाली प्रदर्शन और ऐतिहासिक विवरण पर सावधानीपूर्वक ध्यान देकर, 'सरदार' पटेल के जीवन, नेतृत्व और स्थायी विरासत का व्यापक चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

## कथानक:

फिल्म की शुरुआत गुजरात के सुरम्य परिदृश्य से होती है, जहां एक युवा वल्लभभाई पटेल को उनके धर्मनिष्ठ माता-पिता द्वारा धार्मिकता, साहस और अखंडता के सिद्धांतों से परिचित कराया जाता है। कम उम्र से ही, पटेल में न्याय की गहरी भावना और अपने साथी देशवासियों की पीड़ा को कम करने की तीव्र इच्छा प्रदर्शित हुई। जैसे-जैसे उनकी उम्र बढ़ती है, पटेल का अन्याय के खिलाफ लड़ने का संकल्प मजबूत होता जाता है। महात्मा गांधी की शिक्षाओं से और उनके अहिंसक प्रतिरोध का दर्शन वल्लभभाई पटेल के साथ गहराई से मेल खाता है।

सरदार फिल्म में विभाजन के मामले पर आयोजित चर्चा को चित्रित करने में न्याय किया गया है। यह मोहम्मद अली जिन्ना के दुर्भावनापूर्ण इरादों को स्पष्ट रूप से दर्शाता है, जो या तो सरकार का नेतृत्व करना चाहते थे या एक अलग राष्ट्र का नेतृत्व करना चाहते थे। फिल्म में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के अलगाववादी दृष्टिकोण को सूक्ष्म तरीके से त्रुटिहीन और दृढ़ता से सामने लाया गया। एम.के. गांधी जी के अखंड भारत के दृष्टिकोण और सरदार वल्लभभाई पटेल की जिन्ना के धोखे की समझ को बहुत अच्छे से चित्रित किया गया है।

जैसे-जैसे भारत की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष गति पकड़ता गया, पटेल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर एक दुर्जेय नेता के रूप में उभरे। उनकी रणनीतिक प्रतिभा और स्वतंत्रता के प्रति अटूट प्रतिबद्धता ने उन्हें स्वयं गांधीजी सहित उनके साथियों की प्रशंसा और सम्मान का पात्र बनाया। वल्लभभाई पटेल ब्रिटिश साम्राज्य की ताकत को साहस और दृढ़ विश्वास के साथ चुनौती देते हुए, अहिंसक विरोध और सविनय अवज्ञा अभियानों में जनता का नेतृत्व करते हैं।

फिल्म में बड़ी खूबी के साथ 1945 की उस घटना का चित्रांकन किया गया जिसमें आजादी से ठीक पहले नेहरू और सरदार की प्रतिद्वंद्विता प्रकट होती है। कांग्रेस नए अध्यक्ष और भारत के पहले भावी प्रधान मंत्री का चयन कर रही थी। पार्टी के सदस्यों ने सरदार को कहीं अधिक करिश्माई और आकर्षक जन नेता के रूप में चुना और माना। बाद में सरदार

ने अपना नाम वापस ले लिया और नेहरू की उम्मीदवारी का समर्थन किया क्योंकि गांधी की इच्छा थी कि सरदार–नेहरू भारत की आजादी के लिए मिलकर काम करें। इसमें उन घटनाओं को भी शामिल किया गया है कि कैसे सरदार ने संयुक्त राष्ट्र को कश्मीर मुद्दे में हस्तक्षेप करने के नेहरू के फैसले का विरोध किया था।

जैसे–जैसे स्वतंत्रता आंदोलन अपने चरम पर पहुंचता है, पटेल के नेतृत्व गुणों की ऐसी परीक्षा होती है जैसी पहले कभी नहीं हुई। विभाजन की अराजकता और अनिश्चितता के बीच, उन्हें 500 से अधिक रियासतों को नए स्वतंत्र भारत में एकीकृत करने की बड़ी चुनौती सौंपी जाती है। विशिष्ट दृढ़ संकल्प और दूरदर्शिता के साथ, पटेल अभूतपूर्व पैमाने के एक राजनयिक मिशन पर निकलते हैं, अनिच्छुक राजकुमारों के साथ बातचीत करते हैं, कौशल और चातुर्य के साथ सत्ता की राजनीति के विश्वासघाती पानी को पार करते हैं। फिल्म उनके अथक प्रयासों और उन प्रयासों का उनके स्वास्थ्य पर प्रभाव को दर्शाती है।

सरदार में पटेल और गाँधीजी के बीच के विचारों के बीच के द्वंद्व को भी बहुत अच्छी तरह फिल्माया गया है। गाँधी जी आज़ादी के बाद पाकिस्तान को दिए गए वादे के अनुसार धनराशि जारी करने के इच्छुक थे, वहीं सरदार पटेल, जो जानते थे कि उस धनराशि का उपयोग पाकिस्तान द्वारा कश्मीर पर कब्ज़ा करने और कश्मीर में अशांति पैदा करने के लिए किया जाएगा। गाँधी जी के अनशन की वहज से पटेल को पीछे हटना पड़ा और वाएदे के अनुसार पाकिस्तान को 55 करोड़ की धनराशि दे दी गयी। तमाम उदासीनता के बावजूद सरदार पटेल का गाँधीजी के प्रति सम्मान निर्विवाद और अटल था। फिल्म गाँधीजी की सुरक्षा के लिए सरदार पटेल की चिंता को दर्शाती है। तमाम चेतावनियों और सुरक्षा उपायों के बावजूद गांधीजी की हत्या हो जाती है।

सरदार फिल्म के बारे में सबसे दिलचस्प चीजों में से एक यह है कि गांधी और नेहरू को कमजोर व्यक्ति नहीं बनाता है, बल्कि सरदार को अधिक शक्तिशाली के रूप में दर्शाता है। जैसा कि संतोषी की द लीजेंड ऑफ भगत सिंह में हुआ था। फिल्म एच.एम.पटेल, वी.पी. जैसे स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख गुमनाम नायकों को भी महत्व देती है। मेनन, युवा इंदिरा गांधी और मोराराजी देसाई के चरित्र भी इसमें शामिल किए गए हैं। भले ही फिल्म हिंदू मुस्लिम के दिल्ली दंगों, बारडोली सत्याग्रह और अमूल डेयरी के आविष्कार की छवियों को फिर से उभारती है, लेकिन आप देखेंगे कि बड़ी बुद्धिमानी से यह सरदार की जीवनी के मुख्य विषय से भटकती नहीं है। निर्देशक ने कश्मीर, जूनागढ़, हैदराबाद और पंजाब विभाजन प्रवास के वास्तविक खूनी झगड़े का संवेदनशीलता के साथ निपटान किया है। इन ऐतिहासिक घटनाओं को अधिक प्रामाणिक बनाने के लिए सृजनात्मक ढंग से अखबार के फ्रंट–पेज की सुर्खियों के वास्तविक ब्लैक एंड व्हाइट चित्र के रूप में और वास्तविक ब्लैक एंड व्हाइट वीडियो छवियों के साथ में अंकित किया गया है।

जैसे ही सरदार पर पर्दा गिरता है, पटेल की विरासत भारत की सामूहिक चेतना के क्षितिज पर बड़ी हो जाती है। विभाजन की राख से एकजुट भारत बनाने के उनके अथक प्रयास हमें नेतृत्व और दूरदर्शिता की परिवर्तनकारी शक्ति की याद दिलाते हुए विस्मय और प्रशंसा के लिए प्रेरित करती है। विभाजन और कलह से चिह्नित युग में, पटेल के एकता, अखंडता और धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत मार्गदर्शक प्रकाशस्तंभ के रूप में काम करते हैं। हमें विचारधारा की संकीर्ण सीमाओं से ऊपर उठने और साझा मानवता को अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं। पूरी फिल्म हमें बांधे रखती है।

## निष्कर्ष:

सरदार (1993) सरदार वल्लभभाई पटेल के जीवन, नेतृत्व और विरासत का एक विशाल प्रमाण है। अपनी व्यापक कथा, शक्तिशाली प्रदर्शन और गहन अंतर्दृष्टि के माध्यम से, फिल्म स्वतंत्र, एकजुट और समावेशी भारत के लिए पटेल के दृष्टिकोण की स्थायी प्रासंगिकता की एक मार्मिक याद दिलाती है। चाहे आप इतिहास प्रेमी हों, सिनेप्रेमी हों, या केवल प्रेरणा चाहने वाले व्यक्ति हों, सरदार एक सिनेमाई फिल्म है जो आपके दिल और दिमाग पर एक अमिट छाप छोड़ेगी, और हमें याद दिलाएगी कि एक नेता का असली कद उसकी शक्ति या महिमा में नहीं है, लेकिन मानवता की सेवा में है।

# मानव जीवन में पर्यावरण का महत्व

अमर ज्योति कुजुर
प्रबंधन प्रशिक्षु

पर्यावरण में सभी मनुष्य, जीव-जंतु, प्राकृतिक पौधे, पेड़-पौधे, मौसम और जलवायु सभी समाहित हैं। पर्यावरण न केवल जलवायु में संतुलन बनाए रखने का काम करता है बल्कि जीवन के लिए आवश्यक सभी चीजें भी प्रदान करता है। हमारे पर्यावरण का अर्थ है हमारा भौतिक परिवेश और जिस स्थान पर हम रहते हैं उसकी विशेषताएं। भूमि, समुद्र और वायुमंडल की व्यापक प्राकृतिक दुनिया पर्यावरण का हिस्सा हैं। मनुष्य का पर्यावरण के साथ तब से अंत: संबंध है जब से वह पृथ्वी पर आया है। उदाहरण के लिए, मनुष्य सदियों से फसल उगाने हेतु भूमि साफ करने के लिए जंगलों को काट रहा है और ऐसा करके हमने पर्यावरण को बदल दिया है। इसके विपरित, पर्यावरण भी हमें कई तरह से प्रभावित करता है। इसका एक सरल उदाहरण हमारा ठंड या गर्म मौसम के अनुसार अपने कपड़े बदलने का तरीका है। इस लेख में हम आपको बताएंगे कि कैसे मनुष्य अपने पर्यावरण को प्रभावित करते हैं और पर्यावरण मनुष्य को कैसे प्रभावित करता है।

औद्योगीकरण के साथ ही पर्यावरण के साथ हमारा रिश्ता बदल गया। औद्योगीकरण 18वीं शताब्दी में ब्रिटेन में शुरू हुआ। यह कुछ ही समय बाद यूरोप और उत्तरी अमेरिका से होते हुए दुनिया भर में फैल गया। औद्योगीकरण से पहले, मानव की गतिविधियाँ पर्यावरण को प्रभावित नहीं करती थीं। इसका मुख्य कारण है मनुष्य द्वारा उपयोग की जाने वाली प्रौद्योगिकियाँ बड़े पैमाने पर पर्यावरण को प्रभावित करने के बजाय उसी से प्रेरित थीं। उस समय लोग बड़ी ही सीमित मात्रा में पर्यावरणीय प्रभाव वाले हाथ के औजारों और सरल प्रौद्योगिकियों का उपयोग किया करते थे जो कि विशेष रूप से कृषि के लिए थी। उस समय मनुष्य जाति कृषि समाज में रहती थी। औद्योगीकरण को विकसित करने के लिए संसाधनों का अधिक दोहन करने की आवश्यकता हुई। उदाहरण के लिए, अब हम पेड़ों को काटने के लिए शक्तिशाली चेनसॉ का उपयोग करते हैं और फसल उत्पादन के लिए औद्योगिक रूप से उत्पादित रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग करते हैं। इन परिवर्तनों ने पर्यावरण पर मानवीय प्रभाव को तेजी से बढ़ाया है।

पृथ्वी पर मौजूद प्रत्येक तत्व प्रकृति के प्रति उत्तरदायी है और मानव जीवन भी इससे अलग नहीं है।आधुनिकीकरण के कारण, मानव ने पर्यावरण को अपनी उपयुक्तता के अनुसार बदलने की क्षमता विकसित कर ली है, जिसके लघु या दीर्घावधि में नकारात्मक और सकारात्मक दोनों प्रभाव पड़ते हैं। पर्यावरण में कोई भी परिवर्तन मानव जीवन को प्रभावित करता है, जिसका प्रभाव तुरंत नहीं होता है लेकिन मनुष्य को भविष्य में उसके दुष्परिणाम झेलने पड़ते हैं। उदाहरण के लिए, जब औद्योगीकरण से पहले के युग में पर्यावरण प्रदूषण कम था, तब मानव जीवन का औसत जीवनकाल लगभग 85 वर्ष था, जबकि अब यह औसत घटकर 68 वर्ष हो गया है। 21 से 55 वर्ष की आयु के वयस्कों में हार्ट स्ट्रोक, असामान्य रक्तचाप और असामान्य शर्करा स्तर की संभावना दुर्लभ थी परंतु अब यह बहुत आम है। तो क्या बदलाव आया? हमारा शरीर प्रकृति के प्रति प्रतिक्रिया करता है जो मानव द्वारा पर्यावरण में परिवर्तन और उसके अनुसार जीवनशैली अपनाने के कारण हुआ है।

निष्कर्ष यह है कि मानव जीवन प्रकृति और उसकी शक्तियों का एक हिस्सा है। चुनौती देने और सर्वोत्तम संभावना के साथ इसका मुकाबला करने के लिए हम चाहे कुछ भी करें, मानव जीवन पर्यावरण के अंत: संबंध और उसकी प्रतिक्रिया से खुद को अलग नहीं कर सकता है, या तो वह इसकी उपयुक्तता के अनुरूप ढल जाएगा या नष्ट हो जाएगा। इसलिए ऐसा पर्यावरण बनाएं जिसके साथ आप जीना चाहते हैं और ऐसा ही पर्यावरण अपनी भावी पीढ़ी को उपहार में दें।

# हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में बीपीडीएवी स्कूल के छात्रों के लिए कविता वाचन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। प्रस्तुत है पुरस्कृत कविताएँ :

## पुनः नया निर्माण करो

*द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी*

ध्रुव मालपाणी (8बी)

उठो धरा के अमर सपूतो
उठो, धरा के अमर सपूतो।
पुनः नया निर्माण करो।
जन-जन के जीवन में फिर से
नव स्फूर्ति, नव प्राण भरो।
नई प्रातः है, नई बात है
नई किरण है, ज्योति नई।
नई उमंगें, नई तरंगें
नई आस है, साँस नई।
युग-युग के मुरझे सुमनों में
नई-नई मुस्कान भरो।
उठो, धरा के अमर सपूतो।
पुनः नया निर्माण करो।।1।।
डाल-डाल पर बैठ विहग कुछ
नए स्वरों में गाते हैं।
गुन-गुन, गुन-गुन करते भौंरें
मस्त उधर मँडराते हैं।
नवयुग की नूतन वीणा में
नया राग, नव गान भरो।
उठो, धरा के अमर सपूतो।
पुनः नया निर्माण करो।।2।।
कली-कली खिल रही इधर
वह फूल-फूल मुस्काया है।
धरती माँ की आज हो रही
नई सुनहरी काया है।
नूतन मंगलमय ध्वनियों से
गुंजित जग-उद्यान करो।
उठो, धरा के अमर सपूतो।
पुनः नया निर्माण करो।।3।।
सरस्वती का पावन मंदिर
शुभ संपत्ति तुम्हारी है।
तुममें से हर बालक इसका
रक्षक और पुजारी है।
शत-शत दीपक जला ज्ञान के
नवयुग का आह्वान करो।
उठो, धरा के अमर सपूतो।
पुनः नया निर्माण करो।।4।।

## पूत हैं सपूत हैं

*एस. ए. लक्ष्मी*

सांची सीतारामराजू स्वरूप (6बी)

पूत हैं सपूत हैं
भारती के लाल हम
लाल लाजवाब हैं।
विराट हैं विशाल हैं
आदि और अंत हैं
मिट सके ना जो कभी,
ऐसे नौनिहाल हैं।
पूत हैं सपूत हैं...
हम करे सो साधना
हम चले तो गर्जना
अद्वैत निधि के,
हम ही तो अनंत स्रोत हैं
पूत हैं सपूत हैं.....
जो दिख पड़े वो शौर्य हैं
ना छुप सके वो तेज हैं
ज्ञान के विज्ञान के
हम ही तो सूत्रधार हैं।
पूत हैं सपूत हैं.....
हैं युद्ध में शांति हम
हैं धर्म में क्रांति हम
बदले विश्व का स्वरूप जो
हम ही तो वो कर्णधार हैं
पूत हैं सपूत हैं...
चले जो वश तो प्राण दें
वश चले जो प्राण लें
स्वर्ग हो कहीं तो हम
भूमि पे उतार लें,
हम ही तो माँ भारती का गर्व हैं।
पूत हैं, सपूत हैं
माँ भारती के लाल हम
लाल लाजवाब हैं।

## प्यारा भारत (स्वरचित)

नव्या श्रीवास्तव (7बी)

झंडा ऊँचा रहे हमारा
भारत देश है सबसे प्यारा
मेरे देश की बात है बड़ी निराली
कहीं पर रेगिस्तान तो कहीं हरियाली
रंग-बिरंगे त्योहार हैं यहाँ
कि विदेशी भी कहे वाह-वाह
तरह-तरह के व्यंजन बनते यहाँ
ऐसी विविधता मिलेगी और कहाँ?
कदम-कदम पर बदलें भाषा और संस्कृति
पर वसुधैव कुटुम्बकम है यहाँ की रीति
हर क्षेत्र में सबसे आगे हम
विदेशी कंपनियों के सी.ई.ओ भी हम
और तो और
यहाँ पर होते हैं बहुत सारे देसी नुस्खें
अकसर हम सुनते दादी-नानी के जुगाड़ के किस्से
आओ मिल कर जन गण मन गाएँ
देश की खातिर मर मिट जाएँ

## यही तो भारत है मेरा (स्वरचित)

समीरा डो (10डी)

जहाँ देश की शान का प्रतीक
तीन रंगों का वस्त्र हो,
जहाँ मानवता हृदय में बसती
और अहिंसा कर का शास्त्र हो।
जहाँ हर बालक हँसता-खेलता
और स्त्रियों के सीने पर गर्व हो,
जहाँ शत्रु दोस्तों को गले लगाए
और हर दिन कोई पर्व हो।
जहाँ मंगल का संशोधन एक मिसाल
और क्रिकेट में विजय उत्सव है,
इतिहास बदलना, वर्तमान जीतना और भविष्य रचना
इस भूमि पर सब कुछ संभव है।
न एक बार हथियार उठाया
फिर भी दुर्जनों को हराया है,
अरे धरती तो सुशुभित हो ही गई
हमने चाँद पर भी तिरंगा लहराया है।
जहाँ वेद-पुराण का प्रचार होता
और धर्म का हर दिन सवेरा है,
यही तो भारत है मेरा
यही तो भारत है मेरा

## मैं भारत का जवान हूँ

*नवीन शौरी*

पसुपुलेटि हंसिका (10सी)

मैं दुश्मन से नहीं डरता, मैं भारत का जवान हूँ
मरुस्थल की रेत हूँ, सियाचिन का आसमान हूँ।
मैं दुश्मन से नहीं डरता, मैं भारत का जवान हूँ
मैं जून में तपती रेत पर लेटे कहता हूँ,आज सर्दी कम है।
दिसंबर की ठंड पी कर कहता हूँ, गर्मी का मौसम है
मैं बर्फ़ में नौ दिन दफ़्न हो कर जिन्दा निकलता हूँ
सीने में अपनी साँस को टुकड़ों में भरता हूँ
मैं इन महासागर के लहरों के कपड़े बदलता हूँ।
माईनस तीस डिग्री में राइफल टाँग कर
टहलने निकलता हूँ आदमजात की औकात क्या
जब मैं कुदरत से नहीं डरता मैं भारत का जवान हूँ
मैं दुश्मन से नहीं डरता, मैं भारत का जवान हूँ।
मेरी दिवाली में उजाले का ख्याल तक नहीं
मेरी होली में रिश्तों का गुलाल तक नहीं
चाँद हर ईद में तन्हाई में इजाफा लाता है
मुझे राखी बाँधने बस एक लिफाफा आता है।
अपनी माँ का पैर छुए हमें एक अरसा हो गया
मेरा बाप मेरे इंतज़ार में बूढ़ा हो गया
मेरी बीबी सिंदूर लगा कर भी लगती कुँवारी है
मैं ने सहूलत का गला घोंटा ज़रूरत कारी
हाँ मैं निर्दयी हूँ, हाँ मैं निर्दयी हूँ
मैं अपने उजड़ते घरों-आँगन से नहीं डरता
मैं भारत का जवान हूँ, मैं दुश्मन से नहीं डरता
मगर मैं डरता हूँ, हाँ मैं डर जाता हूँ
मैं डरता हूँ नफ़रत की आग से
मज़हब के चोलों से
सियासत के साँप के कातिल सपोलों से
हवा में फैली अफ़वाह से डरता हूँ
मैं सैलाब एक गुमराह से डरता हूँ
मुझे सर है मेरी सरजमीं को मेरे अपने उजाड़ेंगे
खून के मोहर से खुद को सँवारेंगें
मैं मज़बूर हूँ, कमजोर हूँ, मैं उनसे लड़ नहीं सकता।
अपनों की तरफ़ बंदूक लेकर चल नहीं सकता
मैं बस बोल सकता हूँ, मैं बस बोल सकता हूँ
मैं बहरों की तरह गूँगा हूँ
तुम्हारें कान पर हैं हाथ, मगर फिर भी मैं बोलूँगा।
हज़ारों साल की इस सभ्यता को गौर से देखो
सुनो आवाज़ तुम नम की ज़रा गहराई से सोचो
तुम्हें क्या सच में लगता है कोई अपना पराया है?
हुआ पैदा जो इस देश में बाहर से आया है?
सभी का खून है शामिल लगी कुर्बानियाँ सबकी
कि हमने हड्डियों को जोड़ कर भारत बनाया है
तुम्हें रर इश्क है इससे तो इसको दिल से अपनाओ
कोई पूछें अगर मज़हब तो हिंदुस्तान बतलाओ।
कभी न तोड़ पायेगी कोई आँधी सियासत की
जुड़ों ऐसे जड़ों से जिंदगी की चाँद कहलाओ
पहाड़ी वादियाँ, मैदान, साहिल याकि सहरा हों
तिरंगा तीन रंगों से बना दिखता सुनहरा हो।
युवा हर प्राण यह प्रण लें, सड़क पर खून ना होगा
मैं सरहद पर खड़ा हूँ, तुम मेरे आँगन में पहरा दो
मैं सरहद पर खड़ा हूँ, तुम मेरे आँगन में पहरा दो।

के. तेजस्वी (9डी)

## देश के वीर सिपाही

*मोनिका जैन*

खून जमाती ठण्ड में भी सीना ताने खड़े हुए
बदन जलाती गर्मी में भी सीमाओं पर अड़े हुए
बाँध शहादत का सहरा, मृत्यु से ब्याह रचाते हैं।
देश के वीर सिपाही देखो ! माँ का कर्ज़ चुकाते हैं
बर्फ़ीली वायु हो चाहे, तूफ़ानों ने दी हो चुनौती
चाहे दुश्मन के खेमे से गोली की बौछारें होती
चाहे हो कैसी भी विपदा, पर ये ना घबराते हैं।
देश के वीर सिपाही देखो ! माँ का कर्ज़ चुकाते हैं
माँ, पत्नी, बच्चों से दूर, राष्ट्र धर्म में रमे हुए
दिल में कितना दर्द ये पाले पर सीमा पर डटे हुए
अपनी जान गँवाकर भी दुश्मन कर्ज़ चुकाते हैं।
धरती माँ के सच्चे बेटे, सर पर कफ़न बाँध कर बैठे
नींद नहीं उनकी आँखों में ताकि हम सब चैन से लेटे
देश की रक्षा के खातिर वे वीरगति को पाते हैं।
देश के वीर सिपाही देखो ! माँ का कर्ज़ चुकाते हैं
कुर्बानी वीरों की जीवन कितनो को दे जाती है
उनके रक्त से सिंचित धरती धन्य धन्य हो जाती है
मौत भी क्या मारेगी उनको, जो मरकर भी जी जाते हैं।
देश के वीर सिपाही देखो ! माँ का कर्ज़ चुकाते हैं.
देख तिरंगा इन वीरों को गर्वित हो लहराता है
भारत माँ का मस्तक भी शान से यूँ इठलाता है
जब-जब सीना ताने ये जीत का बिगुल बजाते हैं
देश के वीर सिपाही देखो ! माँ का कर्ज़ चुकाते हैं।
इन्हें जन्म देने वाली कोख के अहसानमंद
पत्नी और परिवार के बलिदान को शत-शत नमन
इस अतुल्य त्याग का हम मिलकर गीत गाते हैं।
देश के वीर सिपाही देखो ! माँ का कर्ज चुकाते हैं।

# ऑनलाइन सतर्कता शिकायत प्रबंधन पोर्टल लॉन्च किया गया

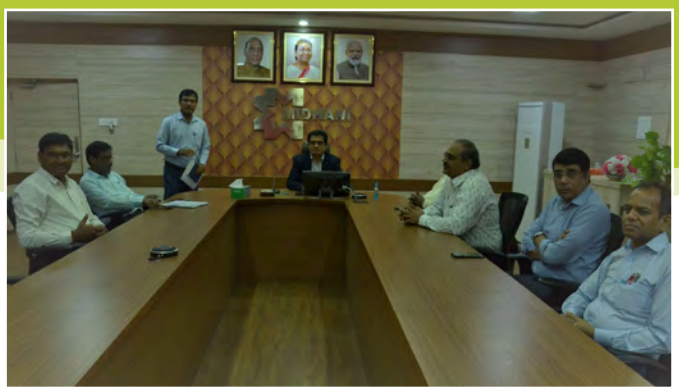

सतर्कता जागरूकता सप्ताह–2023, के उपलक्ष्य में निवारक सतर्कता मामले पर तीन महीने के अभियान के भाग के रूप में डॉ. एस.के. झा, सीएमडी मिधानि ने 07.08.2023 को मिधानि का ऑनलाइन सतर्कता शिकायत प्रबंधन पोर्टल लॉन्च किया। इस अवसर पर श्री एन. गौरी शंकर राव, निदेशक (वित्त), श्री टी. मुत्तुकुमार, निदेशक (उ. एवं वि.), श्री वी. चक्रपाणि, स्वतंत्र निदेशक, डॉ. उपेन्द्र वेन्नम, आईपीओएस, सीवीओ और मिधानि के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

# मिधानि में 9वाँ अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2023 संपन्न

9वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में रक्षा मंत्रालय के अंतर्गत भारत सरकार के उद्यम मिश्र धातु निगम लिमिटेड (मिधानि), हैदराबाद द्वारा दि. 29 मई 2023 से 21 जून 2023 तक हर आँगन योग विषय पर तीन भागों (योग आसनों का अभ्यास, वार्ता तथा योगासन प्रदर्शन) में योग उत्सव 2023 का आयोजन संपन्न हुआ।

21 जून 2023 को मिधानि के कर्मचारियों के लिए डॉ. संजय कुमार झा, सीएमडी, मिधानि के मार्गदर्श में संयंत्र में योग अभ्यास शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर निदेशक (वित्त) श्री गौरी शंकर राव, निदेशक (उत्पादन एवं विपणन) टी. मुत्तुकुमार सहित उच्च अधिकारीगण व कर्मचारीगण शामिल हुए।

'हर आँगन योग' के तहत योग उत्सव की उलटी गिनती के क्रम में मिधानि द्वारा दि. 29 मई 2023 से 21 जून 2023 तक तक योग के अभ्यास सत्र चलाए। योग अभ्यास सत्रों का संचालन अनूप कुमार मंडल, अपर महाप्रबंधक, डाऊन स्ट्रीम ने किया। इन सत्रों का यूट्यूब पर सीधा प्रसारण भी किया गया। सत्रों के दौरान तीन वार्ता कार्यक्रम भी आयोजित किए गए जिनमें श्रीहर्ष वैद्य, गीता संदेश प्रबंधक, इस्कॉन, हैदराबाद ने अपने मन के साथ बेहतर संबंध बनाएँ,

डॉ. रवीचंद्र राव, सहायक निदेशक, राजभाषा विभाग, भारत सरकार ने अच्छी आदतें और ईशा फाऊँडेशन के स्वयंसेवक भार्गव साई ने ईशा क्रिया और इनर इंजीनियरिंग जैसे विषयों पर व्याख्यान दिए।

# देश–विदेश के गणमान्य व्यक्तियों का मिधानि आगमन

*11.08.2023 को उज़्बेकिस्तान के रक्षा मंत्रालय और जेएससी उज़्बेक मेटलर्जिकल प्लांट के प्रतिनिधिमंडल ने मिधानि का दौरा किया। आयुध विभाग के प्रमुख बखोदिरजोनसुल्तानोव के नेतृत्व में उज़्बेकिस्तान की टीम ने आर्मर स्टील विकसित करने के लिए मिधानि के साथ काम करने में रुचि दिखाई।*

*मिधानि के प्रबंधन ने वर्जिनमेटल्स, इस्तांबुल, तर्की के विदेश व्यापार निदेशक श्री टोल्गासेंगुल की 17 मई 2023 को मेजबानी की। मिधानि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. संजय कुमार झा और श्री टोल्गासेंगुल के बीच मिधानि के व्यापार विस्तार में सहयोग को लेकर सार्थक चर्चा हुई। चर्चा के दौरान यह बात प्रकट हुई कि दोनों ही अधिकारी पूर्वी यूरोप क्षेत्र में नए व्यापार अवसरों की खोज करने के लिए रोमांचित हैं।*

*दि. 21.04.2023 को आईआईटी हैदराबाद के निदेशक प्रो. बीएस मूर्ति और उनके संकायों की युवा व गतिशील टीम ने मिधानि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. संजय कुमार झा के साथ व्यापक चर्चा की। मिधानि के युवा प्रबंधकों की टीम ने भी इस विचार–विमर्श में भाग लिया। चर्चा के दौरान दोनों दलों ने एयरोस्पेस, अंतरिक्ष और रक्षा संबंधी सामग्रियों के अनुसंधान व उत्पादन के क्षेत्र में साथ मिलकर काम करने का निर्णय लिया।*

# मिधानि के सीएमडी पुस्कार से सम्मानित

*लायंस इंटरनेशनल डिस्ट्रिक्ट 320-बी और लीफ एसोसिएशन द्वारा 15 सितंबर 2023 को संयुक्त रूप से आयोजित इंजीनियर्स दिवस के अवसर पर मिधानि के सीएमडी डॉ. एस. के. झा को उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया गया।*

# कंप्यूटर सोसाइटी ऑफ इंडिया (सीएसआई) साइबर सुरक्षा पुरस्कार 2023 से मिधानि सम्मानित

मुंबई में 27 मई 2023 को आयोजित कंप्यूटर सोसाइटी ऑफ इंडिया (सीएसआई) साइबर सुरक्षा पुरस्कार 2023 में मिधानि को 3 श्रेणियों के अंतर्गत पुरस्कार प्राप्त हुए।

**पहला –** मिधानि के आई टी विभाग को सरकारी क्षेत्र/विभाग में उत्कृष्ट साइबर सुरक्षा टीम पुरस्कार; **दूसरा –** मिधानि के निदेशक (उत्पादन एवं विपणन) श्री टी मुत्तुकुमार को उत्कृष्ट मुख्य सूचना सुरक्षा अधिकारी (सीआईएसओ) पुरस्कार और **तीसरा –** श्रीमती मनाली हिंगराजिया, सीएसओ एवं प्रबंधक (आईटी) को साइबर सुरक्षा में उत्कृष्ट महिला पुरस्कार।

मिधानि को ये तीन पुरस्कार साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में उसके द्वारा किए गए अभिनव पहलों और उसके अनुप्रयोगों, डेटा और नेटवर्क की सुरक्षा के लिए मजबूत साइबर सुरक्षा उपायों को लागू करने के लिए दिए गए। इसके अंतर्गत इंटरनेट और इंट्रानेट, परिधि और समापन बिंदु सुरक्षा के बीच सख्त एयरगैप, मिधानि रोहतक में डिजास्टर रिकवरी साइट के साथ टियर-3 प्राथमिक डेटासेंटर, इकाई, नेटवर्क हनीपोटसेटअप आदि शामिल है।

# आत्मनिर्भर भारत – नई पहलें

**पत्रिका प्रकाशन की अवधि के दौरान मिधानि ने भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कुछ नई पहले की हैं। प्रस्तुत है उन पहलों की झलक :**

1. डॉ. एस.के. झा, सीएमडी, मिधानि ने 28-06-2023 को श्री टी. मुत्तुकुमार, निदेशक (उत्पादन एवं विपणन) की उपस्थिति में नई कंडीशनिंग शॉप का उद्घाटन किया। इस महत्वपूर्ण विस्तार से मिधानि की कंडीशनिंग क्षमता में वृद्धि होगी। यह शॉप एसएस स्टील, मैरेजिंग स्टील और सुपर अलॉय इलेक्ट्रोड की कंडीशनिंग के लिए सटीक और समय पर आवश्यकताओं को पूरा करने में मिधानि को और अधिक सक्षम बनाता है।

2. मिधानि ने 13.06.2023 को 127 मिमी (मोटाई), 590 मिमी (चौड़ाई), 900 मिमी (लंबाई), मापने वाले सुपर्नी 718 के भारी फोर्जिंग स्लैब के विकास से एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर हासिल किया है। इन स्लैबों का सफलतापूर्वक निर्माण करके निर्यात बाजार में आपूर्ति की गई है, जो कि मिधानि की एक उल्लेखनीय उपलब्धि है।

3. 12.06.2023 को मिधानि ने आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बढ़ाते हुए दुनिया की दूसरी सबसे उच्च आईज़ोथर्मल फोर्जिंग प्रेस की स्थापना की और एयरो इंजन अनुप्रयोगों के लिए नेट शेप प्रोफाइल डिस्क का उत्पादन किया। दोनों ग्रेड की सामग्री यानी टाइटेनियम मिश्र धातु और सुपर मिश्र धातु को आईज़ोथर्मल रूप से फोर्ज किया गया था।

4. मिधानि ने छह वर्ष पूर्व अर्थात 2017 के आस-पास स्वदेशी रूप से वैक्यूम आर्क रीमेल्टिंग (वीएआर) फर्नेस को विकसित किया था। मिधानि ने 28.05.2023 को इस महत्वपूर्ण फर्नेस में 1000 वां हीट शुरु कर के इतिहास रच डाला। यह मील का पत्थर आत्मनिर्भर भारत के प्रति मिधानि की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

## 5 प्राथमिक चिकित्सा और जीवन रक्षा पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

श्री टी. मुत्तुकुमार, निदेशक (उत्पादन एवं विपणन) ने12.07.2023 को विशेष रूप से कर्मचारियों के लिए डिज़ाइन कर मिधानि में प्राथमिक चिकित्सा और जीवन रक्षा पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया है।सेंट जॉन एम्बुलेंस एसोसिएशन, हैदराबाद के डॉ. मोहम्मद मोहसिन अतिथि संकाय प्रशिक्षक रहे। श्री ए. रामकृष्ण राव, महाप्रबंधक (मानव संसाधन), श्री टीजे राव, उप महाप्रबंधक (प्रशासन) ने इस अवसर की शोभा बढ़ाई। डॉ. पी. वीरराजू, उप महाप्रबंधक (चिकित्सा सेवाएँ), डॉ. जी.आर. प्रवीण ज्योति, वरिष्ठ प्रबंधक (चिकित्सा सेवाएँ) और मेडिकल टीम, एफएसी, मिधानि ने कार्यक्रम का संयोजन किया।

## 6 प्रबंधन प्रशिक्षुओं के लिए इंडक्शन और ओरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित

05.07.2023 को मिधानि के सीएमडी डॉ. एस.के. झा ने नए प्रबंधन प्रशिक्षुओं के लिए आयोजित इंडक्शन और ओरिएंटेशन कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रबंधन प्रशिक्षुओं का कंपनी से जुड़ाव बढ़ाना और उन्हें कंपनी के विज़न-मिशन, प्रणालियों-प्रक्रियाओं से परिचित कराना है। अवसर पर डी (एफ), डी (पी एंड एम) और जीएम (एचआर) ने अपनी उपस्थिति दर्ज कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

## 7 उत्पादकता की वृद्धि के लिए चिंतन शिविर

भारत सरकार के दिशानिर्देशों के अनुपालन में मिधानि प्रबंधन द्वारा 01.07.2023 को अपने अधिकारियों के साथ मिलकर एक चिंतन शिविर का आयोजन किया गया जिसमें उद्यम के सीएमडी डॉ. संजय कुमार झा, निदेशक (वित्त) श्री एन गौरी शंकर राव तथा निदेशक (उत्पादन व विपणन) श्री टी मुत्तुकुमार ने अधिकारियों को मार्गदर्शन दिया। अवसर पर कंपनी के वरिष्ठ अधिकारियों, मध्य-स्तर के प्रबंधकों और नए शामिल हुए अधिकारियों ने भारत सरकार द्वारा निर्धारित रक्षा उत्पादन लक्ष्य को प्राप्त करने में मिधानि के योगदान के लिए विभिन्न रणनीति सुझाव साझा किए।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संबोधन
https://www.facebook.com/100017574612891/videos/pcb.1144461683202057/1144461649868727
निदेशक (वित्त) का संबोधन
https://www.facebook.com/100017574612891/videos/pcb.282597577598375/282597527598380
निदेशक (उत्पादन एवं विपणन) का संबोधन
https://www.facebook.com/100017574612891/videos/pcb.652967286849576/652967190182919

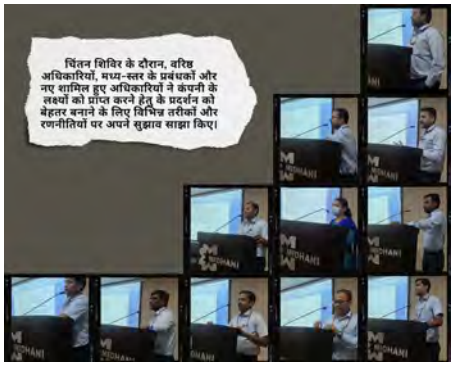

# मिधानि की सामाजिक उपस्थिति

मिधानि ने सीएसआर के तहत आपात स्थिति में जरूरतमंद मरीजों की मदद के लिए एबीवी फाऊंडेशन को एक एम्बुलेंस प्रायोजित करके अपनी सामाजिक उपस्थिति दर्ज की है।

# मिधानि और आईआईएससी के बीच समझौता

मिधानि और आईआईएससी ने 04.08.2023 को सुपरकंडक्टिंग सामग्री विकास के क्षेत्र में काम करने के लिए एक साथ हाथ मिलाया। मिधानि के सीएमडी डॉ. एस.के. झा ने सामग्री अनुसंधान और विकास के क्षेत्र में दोनों संगठनों के साथ सहयोग करने की आवश्यकता व्यक्त की और आईआईएससी के निदेशक डॉ. गोविंदन रंगराजन ने एक रोडमैप विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

# मिधानि और बीईएमएल के बीच एक समझौता

16.09.2023 को सहयोग, स्वदेशीकरण और भविष्य के व्यावसायिक क्षेत्रों में संभावनाओं की खोज करने के लिए मिधानि और बीईएमएल के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

# वार्षिक खेल प्रतियोगिताओं का समापन

15 अगस्त, स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में मिधानि द्वारा आयोजित वार्षिक खेल प्रतियोगिताओं का समापन रोमांचक रूप से क्रिकेट के फाइनल मैच के साथ हुआ। इन प्रतियोगिताओं में टेबल टेनिस, बैडमिंटन, शतरंज, कैरम और वॉलीबॉल खेल और अन्य गतिविधियाँ शामिल रहीं।

https://twitter.com/MidhaniLtd/status/1690391373990526976?t=lElUoDn5DBaN1zxtfRjQdA&s=19

# क्षमता निर्माण कार्यक्रम

माननीय सीवीसी के निर्देशों का अनुसरण करते हुए मिधानि द्वारा सतर्कता जागरूकता सप्ताह – 2023 से पहले तीन महीने के अभियान के दौरान क्षमता निर्माण कार्यक्रम के हिस्से के रूप में, व्याख्यान श्रंखलाओं का आयोजन किया गया। 24 और 28 अगस्त 2023 को मिधानि के वरिष्ठ अधिकारियों के लिए प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण विषय पर श्री बीजी राज, पूर्व निदेशक (वित्त), मिधानि द्वारा तथा 01 सितंबर 2023 को श्री के.राजेंद्रन, वरिष्ठ उप महाप्रबंधक (सतर्कता), पावरग्रिड कॉर्पोरेशन द्वारा मिधानि और बीडीएल अधिकारियों के लिए सार्वजनिक खरीद पर व्याख्यान संपन्न हुए।

# रक्षा सचिव ने की मिधानि की सराहना

रक्षा सचिव माननीय श्री गिरिधर अरमाने, आईएएस ने 07.06.2023 को मिधानि का दौरा किया। उन्होंने मिधानि की अत्याधुनिक सुविधाओं का अवलोकन किया और 300 किलोग्राम 'स्कल मेल्टिंग फर्नेस' का उद्घाटन किया, जो कुशल मेल्टिंग के लिए वैक्यूम वातावरण और चाप उत्पादन का एक संलयन है। इसके

अलावा, 6000 इज़ोथर्मल हाइड्रोलिक फोर्ज प्रेस का अनावरण किया, जिससे मिधानि की विनिर्माण क्षमताओं में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। कर्मचारियों के साथ बातचीत के दौरान उन्होंने आत्मनिर्भर भारत की दिशा में मिधानि की सुविधाओं और प्रयासों की सराहना की।

# एएस (डीपी) का मिधानि दौरा

माननीय रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के एएस (डीपी) श्री टी. नटराजन, आईएएस ने 07.07.2023 को मिधानि का दौरा किया। इस अवसर पर उन्होंने मिधानि में स्थित बार एंड वायर शॉप में लेयरवाइंडिंग सुविधा का उद्घाटन किया और उच्च प्रबंधन के साथ बातचीत के दौरान मिधानि की उत्पादन क्षमताओं की प्रशंसा की।

# आदित्य–एल1

## के सफल प्रक्षेपण के लिए टीम इसरो को बधाई हो।

इस उल्लेखनीय प्रयास के लिए
विशेष धातुओं और मिश्र धातुओं की आपूर्ति के
माध्यम से मिधानि प्रबंधन अपने योगदान पर
बहुत गर्व महसूस करता हैं।

## आदित्य–एल1 मिशन

सूर्य के रहस्यों को उजागर करने वाला पहला भारतीय
अंतरिक्ष–आधारित वेधशाला–श्रेणी का सौर अभियान हैं।

https://shorturl.at/tyJ01
https://t.ly/MnVyv

MIDHANI

**मिश्र धातु निगम लिमिटेड**

कंचनबाग, हैदराबाद – 500058

www.midhani-india.in